दीक्षारंभ–
छात्र प्रेरण कार्यक्रम
हेतु मार्गदर्शिका

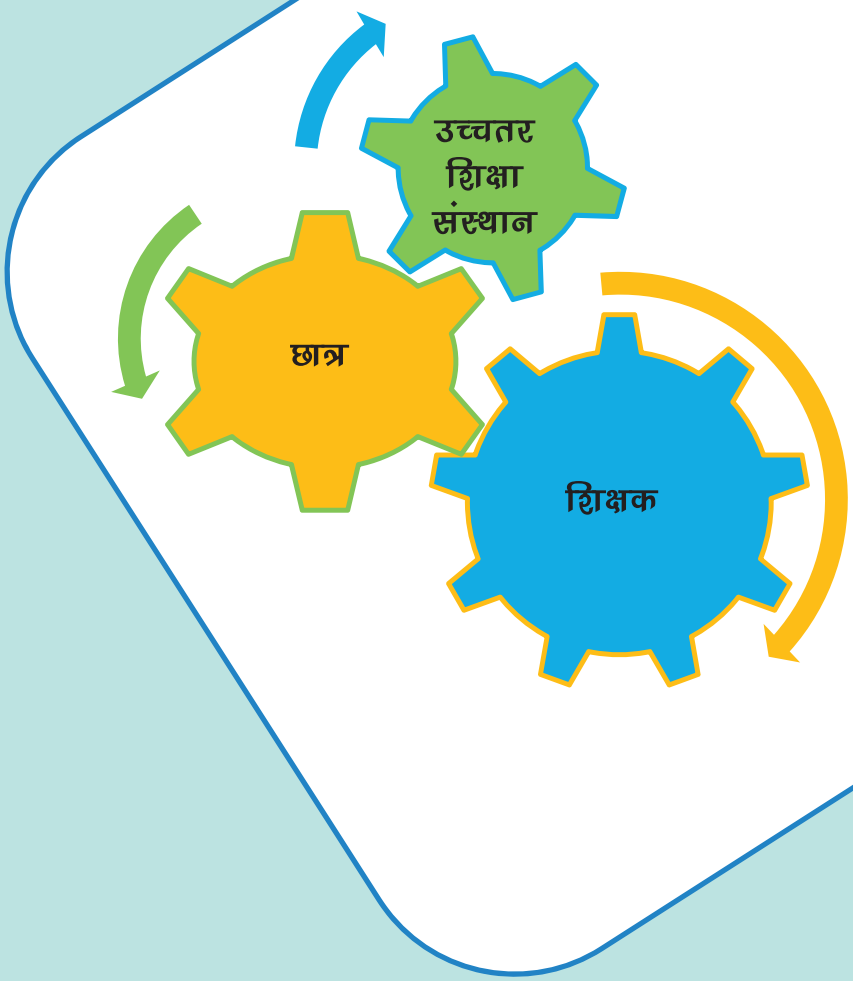

समाजीकरण

संबद्ध करना

अभिशासन

अनुभव प्राप्त करना

शारीरिक क्रिया कलाप; मार्ग दर्शन प्रक्रिया; विभागों/शाखाओं के साथ परिचित होना; सृजनात्मक कला और संस्कृति; साहित्यिक क्रियाकलाप; विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा व्याख्यान; स्थानीय क्षेत्रों का दौरा; पाठ्येत्तर क्रिया कलाप

सत्यमेव जयते
Goverment Of India

ज्ञान–विज्ञान विमुक्तये

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली–110002

दीक्षारंभ–छात्र प्रेरण कार्यक्रम हेतु मार्गदर्शिका

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली–110002

सत्यमेव जयते
Goverment Of India

ज्ञान–विज्ञान विमुक्तये

वेबसाइटः www.ugc.ac.in

© विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

जुलाई, 2019

सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली–110002 द्वारा प्रकाशित।

चंदू प्रेस, डी– 97, शकरपुर, दिल्ली– 110092, फोनः +919810519841, 011–22526936

ई–मेलः chandupress@gmail.com द्वारा डिजाईन और मुद्रित किया गया।

प्राक्कथन

वर्तमान में, भारतीय उच्चतर शिक्षाप्रणाली में 3.6 करोड़ छात्र नामांकित हैं। विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों का उत्तरदायित्व प्रत्येक छात्र को गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करना है। माध्यमिक से उच्चतर शिक्षा और/अथवा स्नातक से स्नातकोत्तर शिक्षा में छात्र के प्रवेश करने पर संस्थान के समर्थन की आवश्यकता होती है कि वे छात्रों में जुड़ाव की भावना और उनके अधिकारों के साथ उत्तरदायित्व के बोध का विकास कर सकें।

उच्चतर शिक्षा संस्थान व्यक्ति–विशेष, परिवार तथा समाज के विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और व्यक्ति विशेष को सभी क्षेत्रों का ज्ञान अर्जित करने, उत्तरदायित्व की भावना हृदयंगम करने तथा उनकी आंतरिक क्षमता को सही दिशा देने में सहायता करके एक सुदृढ़ राष्ट्र की नींव रखते हैं।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने नए परिवेश में ढ़लने, साथी छात्रों तथा शिक्षकों के साथ मित्रवत् संबंध बनाने, सामाजिक प्रासंगिकता के विभिन्न मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने, मानव मूल्यों को आत्मसात् कर एक जिम्मेदार नागरिक बनने में छात्रों की सहायता के उद्देश्य से दीक्षारंभ–छात्र प्रेरण कार्यक्रम मार्गदर्शिका बनाकर तैयार की है। छात्र–प्रेरण कार्यक्रम लाभप्रद शिक्षण–ज्ञानार्जन अनुभव की गति निर्धारित करने में शिक्षकों तथा छात्रों दोनों की सहायता करेगा। मैं इस गाइड को विकसित करने के लिए समिति के सदस्यों के प्रति हार्दिक धन्यवाद और आभार व्यक्त करता हूँ।

मुझे 'दीक्षारंभ–छात्र प्रेरण कार्यक्रम मार्गदर्शिका' को साझा करते हुए हर्ष हो रहा है और सभी विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों से उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश करने वाले छात्रों के लिए प्रेरण कार्यक्रम को निष्पादित करने का आग्रह करता हूँ। मुझे विश्वास है कि विद्वान् कुलपतियों के सक्षम मार्गदर्शन में इस कार्यक्रम का सफल कियान्वयन होगा।

धीरेन्द्र पाल सिंह

नई दिल्ली
11 जुलाई , 2019

(प्रो0 धीरेन्द्र पाल सिंह)
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

दीक्षारंभ–छात्र प्रेरण कार्यक्रम हेतु मार्गदर्शिका

अनुक्रमणिका

1.	प्रस्तावना	1
2.	छात्र प्रेरण कार्यक्रम	1
3.	दैनिक क्रियाकलाप	2
3.1	शारीरिक क्रियाकलाप	2
3.2	मार्गदर्शन	2
4.	अन्य क्रियाकलाप	3
4.1	विद्यालय / विभाग से परिचित होना	3
4.2	सृजनात्मक कला तथा संस्कृति	3
4.3	साहित्यिक क्रियाकलाप	4
4.4	विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा व्याख्यान	4
4.5	स्थानीय क्षेत्र का दौरा	4
4.6	महाविद्यालय में पाठ्येत्तर क्रियाकलाप	4
5.	समय सारणी / कार्यक्रम	4
5.1	प्रारंभिक चरण	4
5.2	नियमित चरण	5
5.2.1	दैनिक कार्यक्रम	5
5.2.2	अपराह्न कालीन क्रियाकलाप (अदैनिक)	5
5.3	प्रेरण कार्यक्रम के उपरांत	6
5.3.1	प्रेरण कार्यक्रम के उपरांत अनुवर्ती कार्यवाही (समान सेमेस्टर)	7
5.3.2	अनुवर्ती कार्यवाही (उत्तरवर्ती सेमेस्टर)	7
6.	सारांश	8
	परिशिष्ट – 1 छात्र प्रेरण कार्यक्रम हेतु तैयारी– जांच सूची	8
	परिशिष्ट – 2 सार्वभौमिक मानव मूल्यों के संबंध में मार्गदर्शक सत्रों हेतु प्रवेशिका	14

1. प्रस्तावना

विद्यालय से विश्वविद्यालय/महाविद्यालय में जाना विद्यार्थी जीवन का सबसे चुनौतीपूर्ण घटनाक्रम होता है। जब नए छात्र किसी संस्थान में प्रवेश करते हैं, वे विविध प्रकार की सोच, पृष्ठभूमि तथा तैयारी के साथ आते हैं। वे नए अपरिचित परिवेश में आते हैं, उनमें से अधिकांश को विश्वविद्यालय/महाविद्यालय के बारे में बहुत थोड़ी जानकारी होती है। इसलिए, नए छात्रों का उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में स्वागत करना तथा उन्हें उनकी नई भूमिका के लिए तैयार करना, एक महत्वपूर्ण कार्य है।

वर्तमान में, अधिकांश संस्थानों द्वारा एक–दो दिन के अभिविन्यास कार्यक्रम के अलावा कुछ नहीं किया जाता है। नए संस्थान में समायोजित होने कीसमग्र प्रक्रिया में मदद करने के लिए दीक्षारंभ को तैयार किया गया है। इसलिए, इसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए। इसे मात्र एक अभिविन्यास कार्यक्रम और केवल अभिविन्यास कार्यक्रम से अधिक होना चाहिए।

2. दीक्षारंभ–छात्र प्रेरण कार्यक्रम

दीक्षारंभ– छात्र प्रेरण कार्यक्रम का उद्देश्य नए छात्रों को नए परिवेश में सहज महसूस कराने, उनमें संस्थान की विशिष्ट प्रकृति तथा संस्कृति को सिखाने, अन्य छात्रों और संकाय सदस्यों के साथ एक संबंध बनाने तथा उन्हें व्यापक उद्देश्य तथा स्वयं की खोज की भावना से परिचित कराना है।

'प्रेरण' शब्द को सामान्यतः समग्र प्रक्रिया का ब्यौरा देने के लिए उपयोग किया जाता है, जहां नए छात्र अपनी नई भूमिकाओं तथा परिवेश के अनुकूल स्वयं को व्यवस्थित करते हैं अथवा अभ्यस्त होते हैं। दूसरे शब्दों में, नए प्रवेश लेने वालों को किसी विशिष्ट संस्थान के वातावरण के बारे में शिक्षित करने तथाउसमें मौजूद व्यक्तियों से उन्हें जोड़ने के लिए एक सुनियोजित आयोजन होता है।

नियमित कक्षाओं के आरंभ होने से पूर्व,जैसे ही छात्र संस्थान में प्रवेश करते हैं,दीक्षारंभ नए छात्रों को साथ जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दीक्षारंभ के साथ ही, नए प्रवेशकर्ता संस्थान की नीतियों, प्रक्रियाओं, पद्धतियों, संस्कृति तथा मूल्यों के बारे में सीखते हैं तथा उनके मार्गदर्शक समूह बन जाते हैं।

दीक्षारंभ में विभिन्न पक्ष शामिल हो सकते हैं (एस.ए.जी.ई.):

समाजीकरण : अन्य नए छात्रों, वरिष्ठ छात्रों, छात्र संघ से भेंट तथा विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा व्याख्यान;

संबद्ध होना : विश्वविद्यालय/महाविद्यालय का दौरा, विभाग/शाखा/अध्ययन कार्यक्रम तथा परिसर, स्थानीय क्षेत्र, शहर में महत्वपूर्ण स्थानों का दौरा करना इत्यादि;

अभिशासन : नियम तथा विनियम, छात्र सहायता आदि;

अनुभव : विषय से संबंधित व्याख्यान, अध्ययन कौशल, छोटे समूह में क्रियाकलाप, शारीरिक क्रियाकलाप, सृजनात्मक तथा अभिनयकला, साहित्यिक क्रियाकलाप, वैश्विक मानव मूल्य आदि।

सम्मिलित किये जाने वाले क्रियाकलापों की सूची :

1. शारीरिक क्रियाकलाप
2. मार्गदर्शन
3. विभाग/शाखा से परिचित होना
4. सृजनात्मक कला तथा संस्कृति

5. साहित्यिक क्रियाकलाप
6. विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा व्याख्यान
7. स्थानीय क्षेत्र का दौरा
8. महाविद्यालय में पाठ्येत्तर क्रियाकलाप

इसके अलावा **परिशिष्ट–I** में एक जांचसूची उपलब्ध कराई गई है ताकि संबंधित शिक्षक को प्रवेश कार्यक्रम आयोजित करने में मदद की जा सके।

3. दैनिक क्रियाकलाप

प्रवेश कार्यक्रम के दौरान निम्नवत क्रियाकलाप, कार्यक्रम की संपूर्ण अवधि के दौरान छात्रों को पूर्ण रूप से अपने साथ जोड़ेगा।

3.1 शारीरिक क्रियाकलाप

इसमें खेलकूद तथा क्रीड़ा के दैनिक क्रियाकलाप शामिल होंगे। स्थानीय जलवायु के अनुसार सायंकाल में अथवा अन्य उपर्युक्त समय पर खेलकूद आयोजित किए जा सकते हैं। यह टीमवर्क विकसित करने में सहायक होगा। प्रत्येक छात्र एक खेल को चुनेगा तथा इसे प्रवेश कार्यक्रम के दौरान सीखेगा और आशा है कि वह इसे आगे भी जारी रखेगा।

3.2 मार्गदर्शन

मार्गदर्शन तथा संकाय सदस्यों के साथ जुड़ना दीक्षारंभ का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है। आशा की जाती है कि इससे छात्र तथा संकाय सदस्यों के बीच एक निरामय संबंध स्थापित होगा।

सार्वभौमिक मानव मूल्यों को स्थापित करने के संदर्भ में मार्गदर्शन प्रक्रिया को दीक्षारंभ में सम्मिलित किया गया है। इससे छात्र को स्वयं का अन्वेषण करने तथा ज्ञानार्जन के आनंद का अनुभव करने, समकक्ष के दबाव का मुकाबला करने, साहस के साथ निर्णय लेने, संबंधों से अवगत होने, अन्य छात्रों के प्रति संवेदनशील होने, जीवन में धन का महत्व समझने तथा समृद्धि की भावना आदि का अनुभव करने का अवसर प्राप्त होता है। हमारे संविधान में अधिष्ठापित मानव मूल्य यथा न्याय, स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व, मानव गरिमा तथा राष्ट्र की एकता तथा अखण्डता भी इस चर्चा का भाग हो सकते हैं। अपने बंधु नागरिकों, चाहे वे किसी भी जाति, वर्ग अथवा पंथ से जुड़े हों, के प्रति समानता तथा उत्तरदायित्व की भावना अंतर्निविष्ट करने पर बल दिया जाना चाहिए। चर्चा के दौरान अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों के मुद्दे तथा उनकी आवश्यकताओं का मूल्यांकन किया जाना चाहिए तथा उनका समाधान किया जाना चाहिए। मार्गदर्शन प्रदाता– मार्गदर्शन प्राप्तकर्ता संबंध से छात्रों को संकाय सदस्यों के साथ एक संबंध बनाने में मदद मिल सकती है, जो अध्ययन पाठ्यक्रमों में किसी मुश्किल भरे समय में काफी मददगार साबित हो सकता है।

इस विषयवस्तु के संबंध में मार्गदर्शन प्रक्रिया की पद्धति अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह 'क्या करें', 'क्या न करें' के माध्यम से नहीं किया जाना चाहिए बल्कि छात्रों को चर्चा में शामिल कर अन्वेषण तथा विचार करके किया जा सकता है। इसे व्याख्यान देने की बजाय समूहगत चर्चा तथा वास्तविक जीवन के क्रियाकलापों के माध्यम से ही सर्वोत्तम तरीके से सिखाया जा सकता है। तथापि, समूह चर्चाओं की भूमिका को शिक्षकों के विचारों की स्पष्टता से अधिक महत्व नहीं दिया जा सकता है। यह अनुभव प्रदान करने, विचारों को दिशा प्रदान करने तथा मूल्यों के महत्व को समझने के लिए अनिवार्य है। शिक्षकों को केवल एक विभाग के बजाय सभी विभागों से अथवा संस्थान के बाहर से भी आमंत्रित किया जाना चाहिए।

मार्गदर्शन सत्रों के दौरान निम्नवत् विषयों पर चर्चा की जा सकती है।

1. पहले दिन : छात्रों की आकाक्षाएं, परिवार की आशाएं।
2. दूसरे दिन : मेरी मदद करने वाले लोगों के प्रति आभार।
3. तीसरे दिन : (क) स्वयं की, तथा (ख) शरीर की मानवीय आवश्यकताएं।
4. चौथे दिन : साथियों का दबाव।
5. पाँचवें दिन : समृद्धि।
6. छठे दिन : संबंध।

बेहतर हो कि 20 छात्रों के छोटे समूह तैयार किए जाएं, जिसमें एक मार्गदर्शक संकाय सदस्य को चर्चा करने तथा छात्रों को स्वयं के लिए विचार करने के लिए प्रेरित/उपयोग किया जाए। सार्वभौमिक मानव मूल्यों के संबंध में चर्चा,दीक्षारंभ कार्यक्रम के साथ ही समाप्त न होकर शेष सेमेस्टर तक जारी रह सकता है। यहां तक कि बाद के सेमेस्टर में इस संबंध में अनुवर्ती कार्यवाही पर विचार किया जा सकता है।

छात्रों का ध्यान जीवन से संबंधित मुद्दों तथा व्यापक समाज में उनकी भूमिका की ओर आकर्षित करने के अलावा, यह छात्र तथा शिक्षकों के बीच एक संबंध तैयार करेगा जोकि आगामी 3 से 4 वर्षों और संभवतः उसके बाद तक चलेगा। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि इसे विश्वविद्यालय/महाविद्यालय के संकाय सदस्यों, जो उन्हें शिक्षा प्रदान करते हैं, उनके द्वारा आयोजित किया जाए।

सार्वभौमिक मानव मूल्यों के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु एक सुझावात्मक प्रवेशिका, संदर्भ हेतु **परिशिष्ट–2** में दी गई है।

4. अन्य क्रियाकलाप

दीक्षारंभ के दौरान किए जाने वाले क्रियाकलापों की चर्चा इस भाग में की जा सकती है। इस कार्यक्रम में छात्रों के सम्प्रेषण कौशल का उन्नयन करने के लिए क्रियाकालापों अथवा अल्पकालिक पाठ्यक्रमों को भी शामिल किया जा सकता है। छात्रों की ज्ञानार्जन संबंधी आवश्यकताओं की पहचान की जा सकती है तथा तद्नुसार, ऐसे छात्रों के लिए उपयुक्त उपचारात्मक/'स्वयं'(swayam) पाठ्यक्रमों की सिफारिश की जा सकती है। व्यवहारकौशल (Soft Skills)जैसे मूलभूत अंग्रेजी, गणित, लेखन तथा सम्प्रेषण कौशल आदि भी इस कार्यक्रम का भाग हो सकते हैं।

सभी संस्थान विश्वविद्यालय/महाविद्यालय में उपलब्ध संसाधनों के स्वरूप के अनुसार ऐसे क्रियकालापों को सूचीबद्ध तथा आयोजित कर सकते हैं। तथापि, इन सभी को कार्यक्रम में शामिल किया जाए तो बेहतर होगा।

4.1 विद्यालय/विभाग से परिचित होना

छात्रों को उनके विभाग/अध्ययन–कार्यक्रम/प्रयोगशालाओं/कार्यशालाओं/सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी सुविधाओं से परिचित होना चाहिए। (इसके अलावा उन्हें महाविद्यालय, विद्यालय और स्कूली जीवन के बीच अंतर करने में मदद और विशिष्ट पाठ्यक्रम द्वारा पेश किए जाने वाले आजीविका संबंधी संभावनाओं के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए।)

4.2 सृजनात्मक कला तथा संस्कृति

छात्रों को संस्कृति तथा कला के विभिन्न रूपों जैसे चित्रकला, मूर्तिकला, मिट्टी के बर्तन बनाने के उद्योग, संगीत, नृत्य आदि से भी परिचित कराना चाहिए। इनसे सृजनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा मिलेगा। इससे न केवल सौंदर्यबोध की भावना का विकास किया जा सकेगा

बल्कि इससे सृजनात्मकता में भी वृद्धि होगी, संभवतः आशा की जा सकती है कि यह सृजनात्मकताबाद में उनके अध्ययन में भी परिलक्षित होगी।

4.3 साहित्यिक क्रियाकलाप

साहित्यिक क्रियाकलापों में किसी पुस्तक/लेख को पढ़ना, उसका सारांश लिखना तथा संभवतः वाद–विवाद करना तथा नाटक का मंचन करना आदि शामिल हैं।

4.4 विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा व्याख्यान

छात्रों को अनुभव प्रदान करने के लिए विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा व्याख्यान आयोजित किए जा सकते हैं। ऐसे व्यक्ति जोकि पूर्व छात्र हों, सामाजिक रूप से सक्रिय हों तथा किसी पेशे से जुड़े हों अथवा सार्वजनिक जीवन में हों, उन्हें आमंत्रित किया जाना चाहिए।

4.5 स्थानीय क्षेत्र का दौरा

एक–दूसरे के साथ जुड़ने के लिए शहर के स्मारक अथवा किसी महत्वपूर्ण स्थल का दौरा आयोजित किया जाना चाहिए जैसे पिकनिक। किसी अस्पताल अथवा अनाथालय तक एक या एक से अधिक दौरों का आयोजन किया जाना चाहिए। इससे उन्हें वंचित लोगों के बारे में अनुभव प्राप्त होगा। इन्हें प्रेरण कार्यक्रम के बाद, बेहतर हो कि शनिवार के दिन अथवा जैसा विश्वविद्यालय/महाविद्यालय निर्णय लें, आयोजित किया जाना चाहिए।

4.6 महाविद्यालय में पाठ्येत्तर क्रियाकलाप

नए छात्रों को विश्वविद्यालय/महाविद्यालय में पाठ्येत्तर क्रियाकलापों से परिचित करवाया जाना चाहिए। उन्हें वहां मौजूद सुविधाएं दिखाई जानी चाहिए तथा विभिन्न क्लबों आदि से जुड़े क्रियाकलापों के बारे में जानकारी प्रदान की जानी चाहिए। इस समय चुने हुए वरिष्ठ छात्र, जोकि इन क्रियाकलापों में शामिल रहे हों अथवा इन क्रियाकलापों की अगुवाई कर रहे हों, प्रस्तुतियां दे सकते हैं। अन्य विविध क्रियाकलाप जिन्हें शामिल किया जा सकता है, वे हैं भूमिका निभाना/नुक्कड़ नाटक, पूर्व छात्र/उद्योग संपर्क आदि।

5. समय सारणी/कार्यक्रम

दीक्षारंभ कार्यक्रम के दौरान किए जाने वाले क्रियाकलापों में प्रारंभिक चरण तथा नियमित चरण शामिल हो सकते हैं।

5.1 प्रारंभिक चरण

दिवस	समय	क्रियाकलाप
दिवस शून्य	प्रातः 9:30 बजे से अपराह्न 4:00 बजे तक	शैक्षिक पंजीकरण तथा प्रवेश संबंधी औपचारिकताएं
प्रथम दिवस	प्रातः 9:30 बजे से अपराह्न 12:25 बजे तक	संस्थागत अभिविन्यास
	अपराह्न 12:30 बजे से अपराह्न 01:25 बजे तक	भोजन अवकाश
	अपराह्न 01:30 बजे से अपराह्न 03:55 बजे तक	विभागीय अभिविन्यास
	अपराह्न 04:00 बजे से अपराह्न 05:00 बजे तक	मार्गदर्शक प्रदाता– मार्गदर्शक प्राप्तकर्ता समूह– समूह के भीतर परिचय

5.2 नियमित चरण

प्रवेश का नियमित चरण प्रथम दिवस के उपरांत चालू होगा। इस चरण में रोजाना नियमित कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

5.2.1 दैनिक समय सारणी/कार्यक्रम

कुछ क्रियाकलापों को दैनिक आधार पर किया जाता है जबकि अन्य क्रियाकलापों को प्रेरण कार्यक्रम के भीतर विशिष्ट अवधियों पर आयोजित किया जाता है। सार्वभौमिक मूल्यों के साथ मार्गदर्शन प्रक्रिया पर सत्रों को भाग 3.2 अथवा **परिशिष्ट–2** के अनुसार आयोजित किया जा सकता है। एक प्ररूपी दैनिक समय सारणी जो दूसरे दिन से आरंभ होती है, उसका उल्लेख नीचे किया गया है:–

दैनिक अनुसूची का उदाहरण (दिवस 2 के पश्चात्)

सत्र	समय	क्रियाकलाप	टिप्पणियां
I	प्रातः 9:30 बजे से प्रातः 10:55 बजे तक	प्रातःकालीन सत्र	विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा व्याख्यान
II	प्रातः 11:00 बजे से अपराह्न 12:25 बजे तक	सार्वभौमिक मूल्यों के साथ मार्गदर्शन	
	अपराह्न 12:30 बजे से अपराह्न 01:25 बजे तक	भोजन अवकाश	
III	अपराह्न 01:30 बजे से अपराह्न 02:25 बजे तक	अपराह्न कालीन सत्र	नीचे देखिए
IV	अपराह्न 02:30 बजे से अपराह्न 03:55 बजे तक	अपराह्न कालीन सत्र	नीचे देखिए
V	अपराह्न 04:00 बजे से अपराह्न 05:00 बजे तक	खेलकूद	

5.2.2 अपराह्न कालीन क्रियाकलाप (अदैनिक)

उच्चतर शिक्षा संस्थानों के संदर्भ और व्यवहार्यता के अनुसार प्रेरण कार्यक्रम के दौरान अलग–अलग समय पर निम्नवत क्रियाकलापों को सूचीबद्ध किया जा सकता है।

1. विद्यालय/विभाग से परिचित होना
2. सृजनात्मक कला और संस्कृति
3. साहित्यिक क्रियाकलाप
4. प्रख्यात व्यक्तियों द्वारा व्याख्यान
5. स्थानीय क्षेत्र का दौरा
6. महाविद्यालय में पाठ्येत्तर क्रियाकलाप

अपराह्न के लिए क्रियाकलापों की अनंतिम कार्यक्रम (सत्र को स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप ढ़ाला जा सकता है):

क्रियाकलाप	सत्र	टिप्पणियां
विद्यालय/ विभाग से परिचय	III और IV	दिवस 1
सृजनात्मक कला और संस्कृति	IV	दिवस 2,3 और 4
साहित्यिक (अभिनय क्रियाकलाप/पठ्न/लेखन)	III	दिवस 2,3 और 4
प्रख्यात व्यक्तियों द्वारा व्याख्यान	I	यथा अनुसूचित– 3– 5 व्याख्यान
स्थानीय क्षेत्र का दौरा	-	शनिवार को (प्रवेश कार्यक्रम समाप्त होने पर)
पाठ्येत्तर क्रियाकलाप	III और IV	दिवस 5
प्रवेश कार्यक्रम पर रिपोर्ट (समूह–वार)	III और IV	दिवस 6

छात्रावास में निवास कर रहे छात्रों हेतु दैनिक अतिरिक्त समय सारणी/कार्यक्रम

सत्र	समय	क्रियाकलाप	टिप्पणियां
प्रातः काल	प्रातः 6:00 बजे	उठने का बुलावा	
	प्रातः 6:30 बजे से प्रातः 7:10 बजे तक	शारीरिक क्रियाकलाप	(हल्का व्यायाम तथा योग)
	प्रातः 7:15 बजे से प्रातः 8:55 बजे तक	स्नान, नाश्ता, आदि	
सांय काल	सांयः 5:00 बजे से प्रातः 5:25 बजे तक	हल्के नाश्ते हेतु विराम	
	सांयः 5:30 बजे से प्रातः 8:25 बजे तक	आराम करना तथा रात्रि भोजन	
	सांयः 8:30 बजे से प्रातः 9:25 बजे तक	अनौपचारिक चर्चा (दैनिक रूप से नहीं)	(छात्रावास में)

5.3 प्रेरण कार्यक्रम के उपरांत अनुवर्ती कार्यवाही

प्रेरण कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को संस्थान के साथ–साथ उसके स्वरूप से परिचित होने में मदद करना है। निःसंदेह ऐसी प्रक्रियाओं के लिए समय एक महत्वपूर्ण कारक है और इसलिए, यह सुझाव दिया जाता है कि प्रवेश कार्यक्रम के दौरान तैयार होने वाले समूह, मार्गदर्शक प्रदाता– मार्गदर्शन प्राप्तकर्ता के रूप में कार्य करे। यह समूह नए प्रवेश पाने वाले छात्रों की भाषायी/संप्रेषण कौशल संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु कार्य कर सकते हैं। विभिन्न विषयों में कमजोर छात्रों को संक्षिप्त/प्रारंभिक पाठ्यक्रमों की भी पेशकश की जा सकती है। किसी भी छात्र को शिक्षा संबंधी अथवा वित्तीय अथवा मानसिक आदि किसी भी समस्या की स्थिति में उसे अपने संकाय मार्गदर्शक अथवा छात्र मार्गदर्शक के पास निःसंकोच जाना चाहिए। प्रथम वर्ष के प्रत्येक 10 स्नातकपूर्व छात्रों के लिए एक वरिष्ठ छात्र, छात्र मार्गदर्शक के रूप में होगा और 20 छात्रों के समूह के लिए एक संकाय मार्गदर्शक होगा। ऐसे समूह को महाविद्यालय में छात्र की समूची शिक्षण अवधि के लिए रहना चाहिए। छात्रों के साथ ही शिक्षकों का समूह उसी विद्यालय/विभाग से होगा (वहीं दूसरी ओर, छात्रावास में विभिन्न विभागों के छात्रों को मिश्रित करना उचित है)।

5.3.1 प्रेरण कार्यक्रम उपरांत अनुवर्ती कार्यवाही (समान सेमेस्टर)

यह सुझाव दिया जाता है कि मार्गदर्शक समूह प्रवेश कार्यक्रम समाप्त होने पर उसी सेमेस्टर के भीतर प्रत्येक सप्ताह एक घंटे के लिए अपने संकाय मार्गदर्शक से भेंट करेंगे। यह समय–सारणी में दर्शायी गई निर्धारित बैठक होगी। निःसंदेह समूह अपने आप एक से अधिक बार भेंट करने के लिए स्वतंत्र होंगे, छात्र समूह को उनके संबंधित संकाय मार्गदर्शक के घर पर रात्रि भोजन अथवा चाय के लिए आमंत्रित किए जाने का स्वागत किया जाएगा। वहीं अन्य क्रियाकलाप जैसे प्रकृति की सैर आदि भी आयोजित किए जा सकते हैं जो कक्षा से इतर छात्रों और शिक्षकों के बीच संबंध बनाने में मदद करेंगे। इसके अलावा, निम्नवत मदों को भी शामिल किया जा सकता है:–

1. सेमेस्टर के दौरान सामाजिक संवेदीकरण हेतु तीन दिवसीय क्षेत्र दौरे का आयोजन करें जैसे कोई गांव, अस्पताल, अनाथालय आदि।

2. आपस में मिलने–जुलने अथवा इतिहास अथवा शहर के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए किसी स्मारक का एक दौरा आयोजित करें।

5.3.2 अनुवर्ती कार्यवाही (उत्तरवर्ती सेमेस्टर)

उत्तरवर्ती सेमेस्टरों में निरंतरता बनाए रखने का परामर्श दिया जाता है। यह सुझाव दिया जाता है कि उत्तरवर्ती सेमेस्टरों के प्रारंभ होने पर, अनुवर्ती कार्यवाही से संबंधित क्रियाकलापों के लिए तीन संपूर्ण दिन अलग रखे जाएं। प्रेरणादायक फिल्में दिखाएं, समूह द्वारा निर्मित कलाकृतियों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम की व्यवस्था करें, सामूहिक चर्चा का आयोजन करें तथा विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा व्याख्यान का आयोजन करें। तत्पश्चात्, माह में एक बार सामूहिक चर्चा की भी व्यवस्था की जा सकती है।

6. सारांश

उच्चतर शिक्षा का उद्देश्य मानव के विकास में सहायता करना, उनकी प्रगति के लिए उत्तरदायी होना तथा समाज और प्रकृति को पोषित करने के साथ–साथ उन्हें अपनी आजीविका अर्जित करने की स्थिति में लाना है। प्रवेश पाने वाले स्नातकपूर्व छात्र जो उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने के लिए अधिकांशतया उनके माता–पिता व समाज द्वारा प्रभावित होते हैं और वे ऐसा अपनी रुचि और प्रतिभा को समझे बिना ही करते हैं। इस बात की संभावना बहुत अधिक होती है कि छात्र शिक्षा संस्थान के साथ–साथ उच्चतर शिक्षा के उद्देश्यों के बारे में एक समझ विकसित करने में असफल रहें। स्नातक छात्र के पास नागरिक के रूप में उनके कार्य से संबधित ज्ञान तथा 'मेटा–स्किल' होनी चाहिए।

दीक्षारंभ का निर्माण नए छात्रों को सहज अनुभव में मदद करने, अपनी शैक्षिक रुचि तथा क्रियाकलाप की खोज करने, प्रतिस्पर्धा कम करने तथा उन्हें उत्कृष्टता प्राप्ति हेतु कार्य करने, उनके बीच मैत्री संबंध को बढ़ावा देने, शिक्षकों तथा छात्रों के बीच संबंध तैयार करने, जीवन के नए आयाम विकसित करने तथा चरित्र निर्माण करने के लिए किया जाना चाहिए।

सार्वभौमिक मानव मूल्यों यथा सत्य, सदाचारपूर्ण व्यवहार, प्रेम, अहिंसा तथा शांति पर आधारित मार्गदर्शन, प्रवेश कार्यक्रम की धुरी अथवा मुख्य स्तंभ के रूप में कार्य कर सकता है तथा आत्म जागरूकता तथा संवेदनशीलता, समानता, सहृदयता तथा एकता की भावना विकसित करने में मदद करता है। छात्रों का ध्यान समाज तथा प्रकृति की ओर आकर्षित किए जाने की आवश्यकता है। उन्हें उनके परिवार के साथ उनके संबंध के बारे में चिंतन करने में मदद करें, जोकि परिवार के रूप में महाविद्यालय का विस्तार है तथा छात्रों को आपस में तथा शिक्षक के साथ जोड़ता है, ताकि वे किसी समस्या, जिसका वे सामना कर रहे हों, को साझा कर सकें तथा मदद प्राप्त कर सकें।

परिशिष्ट–1

दीक्षारंभ–छात्र प्रेरण कार्यक्रम हेतु तैयारी– जांच सूची

छात्र प्रेरण कार्यक्रम हेतु तैयारी करना– जांच सूची

क.1.1 प्रेरण कार्यक्रम संबंधी नीति

1. प्रत्येक संस्थान की छात्रों के प्रेरण हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के गुणवत्ता अधिदेश तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग दिशानिर्देशों के अनुरूप एक प्रेरण कार्यक्रम संबंधी नीति होगी।
2. प्रेरण कार्यक्रम संस्थान द्वारा पेश किए जा रहे किसी भी स्नातकपूर्व कार्यक्रम में प्रवेश पाने वाले सभी नए छात्रों के लिए अनिवार्य होगा।
3. प्रवेश नीति में प्रेरण कार्यक्रम चलाने संबंधी दिशानिर्देश, उद्देश्य तथा प्रक्रिया का ब्यौरा होगा।
4. व्याख्यान/बातचीत के लिए 20 प्रतिशत से अधिक समय नहीं लिया जाएगा, जिसमें अधिकांश समय क्रियाकलापों के लिए विहित होगा।
5. छात्रों को छोटे समूहों में समूहबद्ध करके क्रियाकलाप किए जाएंगे (सामूहिक चर्चा सहित)

क.1.2 प्रेरण कार्यक्रम में भागीदार

1. नए दाखिल किए गए छात्र
2. संस्थानों के प्रमुख
3. महत्वपूर्ण अधिकारी/प्रशासनिक कर्मचारी
4. संकाय मार्गदर्शक
5. चयनित पूर्व–छात्र
6. छात्र परिषद्/संगठन
7. चयनित वरिष्ठ छात्र
8. सिविल समाज
9. आमंत्रित विशिष्ट व्यक्ति

क.1.3 व्यापक क्षेत्र

1. जीवन के उद्देश्यों का महत्व समझने के लिए उच्चतर शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य तथा प्रासंगिकता।
2. राष्ट्रीय विकास सरोकार, विकास परिदृश्य तथा प्राथमिकताएं।
3. समुदाय, 'वर्ल्ड ऑफ वर्क' तथा वैश्विक समाजसे सम्पर्क।
4. स्व–सशक्तिकरण, अभिप्रेरणा, सामूहिक कार्य तथा नेतृत्व विकास।
5. सक्षमता तथा आत्मविश्वास के साथ रचनात्मक तथा सृजनात्मक ढंग से स्वेच्छापूर्वक जीवनयापन करना; जीवन कौशल जिसमें स्वैच्छिक सम्प्रेषण, निर्णय लेना, समस्या समाधान, सृजनात्मक चिंतन, विवेचनात्मक/ वैज्ञानिक चिंतन, अंतर्वैयक्तिक कौशल, स्व–जागरूकता, समानुभूति, समभाव, दबाव से निपटना, लचीलापन शामिल है।

6. संकाय सदस्यों के साथ मैत्री संबंध बनाना तथा मार्गदर्शन।

7. संस्थागत नियम तथा विनियम, मानदंड, शैक्षिक तथा प्रशासनिक ढांचा तथा ज्ञानार्जन संसाधन।

8. संस्थागत सांस्कृतिक सदाचार, शिष्टाचार व रीति तथा मूल्य प्रणाली।

9. सर्वांगीण तथा समग्र विकास हेतु उपलब्ध बाह्य तथा आंतरिक स्रोत (पाठ्यक्रम से संबंधित, सह–पाठ्यक्रम तथा पाठ्येत्तर) ।

10. संस्थान द्वारा चलाए जा रहे खेलकूद, सांस्कृतिक, सृजनात्मक परामर्शदात्री, कल्याण संबंधी क्रियाकलाप।

11. उभरते हुए वृत्ति संबंधी अवसर तथा चुनौतियां।

12. छात्रों द्वारा चयनित विषय/अध्ययन पाठ्यक्रम को आरंभ किया जाना तथा उनका महत्व।

13. रैंगिगरोधी, यौन उत्पीड़न के निवारण, स्वच्छ भारत अभियान, मादक पदार्थ संबंधी जागरूकता आदि के बारे में मौजूद संस्थागत–तंत्र के संबंध में जागरूकता (प्रवेश कार्यक्रम में केवल चयनित मदों पर ही विचार किया जाए)।

14. स्वास्थ्य/स्वच्छता/योग/समय प्रबंधन आदि।

15. ई–ज्ञान अर्जन संसाधन, शिक्षा को नियोजन योग्य बनाने के लिए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा सोशल मीडिया का अनुप्रयोग।

क. 1.4 प्रेरण कार्यक्रम आयोजित करने से पूर्व तैयारी

प्रेरण कार्यक्रम में नए छात्रों को उच्चतर शिक्षा तथा संस्थागत संस्कृति से परिचित करवाने की एक सुनियोजित प्रक्रिया होनी चाहिए। इसे आरंभ करने से पूर्व, पहले ही सभी क्रियाकलापों की योजना बनाना अनिवार्य है। निम्नवत तैयारी किए जाने की सिफारिश की जाती है:–

1. नए छात्रों की प्रेरण प्रक्रिया के संबंध में संस्थान की वेबसाइट पर एक हाइपरलिंक उपलब्ध कराया जाना चाहिए जिसमें प्रेरणकी प्रक्रिया,विस्तृत समय सारणी, रोजाना उपस्थित रहने संबंधी उपबंध, प्रतिक्रिया आदि के बारे में जानकारी होनी चाहिए।

2. शिक्षा की प्रक्रिया को प्रभावित करने में शामिल सभी भागीदारों की संयुक्त बैठक।

3. संस्थान के मुखिया तथा शीर्ष प्रबंधन से पूर्ण सहयोग।

4. नए छात्रों को यह जानकारी प्रदान की जाए कि प्रेरण कार्यक्रम एक अनिवार्य, क्रेडिट रहित पाठ्यक्रम है, जिसके लिए संस्थान द्व ारा एक प्रमाणपत्र जारी किया जाएगा।

5. शिक्षक तथा अन्य भागीदारों द्वारा अनिवार्य भागीदारी सुनिश्चित करना।

6. संस्थान के स्वरूप, आकार तथा अवस्थिति के आधार पर क्रियाकलापों की विस्तृत समय सारणी तैयार करना।

7. प्रेरण कार्यक्रम नीति तैयार करना तथा छात्रों के लिए चार्टर तैयार करना जिसमें उनके उत्तरदायित्व का उल्लेख किया गया हो।

8. प्रेरण कार्यक्रम समिति का गठन, जो संस्थान के मुखिया के परामर्श से विस्तृत प्रेरण कार्यक्रम तैयार करेगी, समग्र प्रेरण कार्यक्रम को चलाएगी, उसकी निगरानी करेगीतथा समन्वय करेगी।

9. प्रेरण कार्यक्रम के आरंभ होने से पूर्व मार्गदर्शक समन्वयक की नियुक्ति की जाएगी। उसका उत्तरदायित्व मार्गदर्शक समूह तैयार करना, सामूहिक चर्चा को निर्बाध रूप से चलाना सुनिश्चित करना और आवधिक रूप से मार्गदर्शकों की बैठक आयोजित करना होगा।

10. प्रेरण कार्यक्रम किस प्रकार आरंभ करें, इस संबंध में भागीदारों के लिए आधे दिन की एक कार्यशाला आयोजित करना।

11. छात्रों को मार्गदर्शन प्रदान करने तथा समग्र शिक्षा प्रदान करने तथा जीवन के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करने हेतु संकाय सदस्यों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाना।

क. 1.5 प्रेरण कार्यक्रम के स्तर

1. संस्थान, संकाय/विद्यालय, विभाग, मार्गदर्शक समूह तथा व्यक्ति विशेष के स्तर पर प्रेरण कार्यक्रम चलाया जाए।

2. आमुख बातचीत, आभासी (इंटरनेट तथा दृश्य–श्रव्य सामग्री) तथा क्षेत्र का दौरा।

3. पूर्व–प्रवेश कार्यक्रम, इंटरफेस तथा प्रेरण कार्यक्रम के पूर्ण हो जाने के उपरांत भी अध्ययनरत रहते हुए भी इसे जारी रखना।

क. 1.6 प्रेरण कार्यक्रम की अनुवर्ती कार्यवाही

प्रथम सेमेस्टर में एक सप्ताह के उपरांत किए जाने वाले क्रियाकलाप :

1. मार्गदर्शक समूह की बैठक सप्ताह में एक बार आयोजित की जाए तथा सेमेस्टर के अंत तक बैठकें जारी रहें।

2. सेमेस्टर के दौरान समाज के प्रति संवेनदनशीलता पैदा करने हेतु तीन क्षेत्र दौरे आयोजित करना। उदाहरण के लिए एक गांव, अस्पताल तथा अनाथालय आदि।

3. आपसी मैत्री संबंध बनाने के उद्देश्य से किसी स्मारक अथवा महत्वपूर्ण स्थल का एक दौरा आयोजित करें साथ ही इतिहास अथवा शहर के बारे में जागरूकता पैदा करें।

क. 1.7 महत्वपूर्ण बिंदु

1. संस्थान की प्रेरण कार्यक्रम समिति, संस्थान के स्वरूप, पेश किए जाने वाले कार्यक्रमों, कार्यक्रमों के स्तर, शिक्षकों तथा छात्रों की संख्या, अवस्थिति आदि के आधार पर एक विस्तृत कार्यक्रम के बारे में निर्णय लेगी।

2. प्रेरण कार्यक्रम का वेबसाइट तथा मीडिया के माध्यम से व्यापक प्रचार किया जाना चाहिए।

3. संस्थान को प्रेरण कार्यक्रम से संबंधित सभी अभिलेखों का रखरखाव करना चाहिए तथा छात्रों के साथ नियमित रूप से संवाद करने के लिए एक प्रणाली विकसित करनी चाहिए।

4. प्रेरण कार्यक्रम आरंभ करने से पूर्व एक मार्गदर्शक समन्वयक की नियुक्ति की जानी चाहिए।

   उसका उत्तरदायित्व मार्गदर्शक समूह का गठन करना, सामूहिक चर्चा को निर्बाध रूप से चलाना सुनिश्चित करना, आवधिक रूप से मार्गदर्शकों की बैठकें आयोजित करना।

5. संस्थान को शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए आधे दिन की अभिविन्यास कार्यशाला आयोजित करनी चाहिए कि प्रेरण कार्यक्रम को किस प्रकार चलाया जाए।

6. मार्गदर्शक समूह अध्ययन कार्यक्रम की संपूर्ण अवधि के लिए जारी रहेगा, समसामयिक विषयों पर बातचीत के माध्यम से छात्रों को सहायता प्रदान करेगा तथा भावी प्रयासों में सफल होने के लिए उनकी सक्षमताओं/प्रतिभाओं को विकसित करेगा।

7. ज्ञानार्जन में प्रौद्योगिकी के उपयोग को उच्चतर शिक्षा का अभिन्न अंग होना चाहिए।

8. सभी शिक्षकों को प्रवेश/अभिविन्यास कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

9. बड़े संस्थान/भौगोलिक रूप से फैले हुए परिसर के मामले में संस्थान के स्तर पर प्रवेश कार्यक्रम को समूह में/अथवा वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित किया जाए।

क. 1.8 छात्र प्रेरण कार्यक्रम के दौरान संस्तुत कार्यवाहियां

- प्रेरण कार्यक्रम के लिए उद्देश्य निर्धारित करें।
- प्रेरण कार्यक्रम को एक सामूहिक प्रयास बनाएं।
- एक सुगठित प्रेरण कार्यक्रम तैयार करें।
- कार्यक्रमों की समय–सारणी उपलब्ध कराएं।
- प्रेरण कार्यक्रम समन्वयक नियुक्त करें जो सभी कार्यवाहियों में सक्रिय रहे और सक्रिय रूप से भागीदारी करे।
- प्रेरण कार्यक्रम को छात्र केन्द्रितबनाएं और यह विविधता के प्रति अनुकूल होना चाहिए। इसमें वार्ता संबंधी गतिविधियां शामिल करें।
- भागीदारों का स्वागत करने और उनमें चर्चा आरंभ कराने के लिए क्रियाकलापों को शामिल करना।
- व्याख्यानों में कमी करना।
- सामूहिक आयोजन हेतु अवसर प्रदान करना।
- सृजनात्मक तथा अभिनय कला तथा साहित्यिक क्रियाकलापें, पूर्वछात्र/उद्योग विशेषज्ञों के बीच संपर्क को शामिल करें।
- वरिष्ठ छात्र मित्रों का सहयोगप्राप्त करें।
- छात्रों को उनके मध्य तथा शिक्षकों के साथ शीघ्र सामाजिक एकीकरण करने को बढ़ावा देने पर ध्यान दें।
- यह सुनिश्चित करें कि इकाई तथा पाठ्यक्रम संबंधी जानकारी अद्यतन हो तथा छात्रों को उपलब्ध कराई जाए; साहित्य चोरी के मुद्दे से शीघ्र परिचित करवाएं।
- सुरक्षा तथा संरक्षा; स्वास्थ्य तथा स्वच्छता सुविधाओं पर जानकारी दें।
- सूचना प्रौद्योगिकी तथा आभासी ज्ञानार्जन ('स्वयं')
- पर्यावरण के संबंध में जागरूकता, मानव मूल्य, चलचित्र दिखाना, विभिन्न क्लब।
- खेलकूद तथा सांस्कृतिक अवसर; विभिन्न वित्तपोषी योजनाओं के बारे में जानकारी।
- एनएसएस/एनसीसी
- प्रवेश कार्यक्रम का नियमित रूप से मूल्यांकन – प्रतिक्रिया प्राप्त करें।

1.9 छात्रों के उत्तरदायित्व

सभी छात्रों का उत्तरदायित्व है कि वेः–

- प्रेरण
- विश्वविद्यालय/महाविद्यालय समुदाय के सभी सदस्यों का आदर करें।
- परिसर में रहते हुए तथा उसके बाहर अपने अच्छे आचरण के माध्यम से विश्वविद्यालय/महाविद्यालय का जिम्मेदार घटक के रूप में प्रतिनिधित्व करें।
- यह सुनिश्चित करें कि उनकी कार्यवाहियों का विश्वविद्यालय/महाविद्यालय, स्थानीय तथा व्यापक समुदाय पर सकारात्मक प्रभाव हो।
- विश्वविद्यालय/महाविद्यालय की संस्कृति को ग्रहण करें।
- शिक्षा तथा पेशेवर अध्ययन को परिश्रम, ईमानदारी तथा जिम्मेदार तरीके से अनुशीलन करें।
- मानव जाति के कल्याण को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय/महाविद्यालय की पहल के साथ जुड़े।
- विश्वविद्यालय/महाविद्यालय की नीतियों तथा प्रक्रियाओं का अनुपालन करें।
- जब कभी सहायता की आवश्यकता हो तो उपयुक्त सहायता तथा मार्गदर्शन प्राप्त करें।
- छात्र के रूप में अपने उत्तरदायित्वों तथा अधिकारों के बारे में भली–भांति जानकारी रखें।
- आपसी अनुभव को साझा करने के लिए विश्वविद्यालय/महाविद्यालय के साथ मिलकर कार्य करें।

परिशिष्ट – 2

सार्वभौमिक मानव मूल्यों के संबंध में मार्गदर्शक सत्रों हेतु प्रवेशिका

क. छात्रों की आकाक्षाएं तथा परिवार की अपेक्षाएं

क. 1. अपने समूह के छात्रों को जानिए

आप संक्षेप में अपना परिचय देकर सत्र आरंभ कर सकते हैं तथा उन्हें सूचित कर सकते हैं कि आप उनके मानव मूल्यों के मार्गदर्शक होंगे। छात्रों को एक–एक करके अपना परिचय देने को कहें (ऐसी भाषा में जिसमें उन्हें सुविधा हो)

(अ) व्यक्तिगत के साथ–साथ परिवार के स्तर पर

- स्थान/शहर जहां से मैं आता हूँ (मैं से अभिप्राय छात्र से है)
- परिवार और विद्यालय की पृष्ठभूमि (जिस सीमा तक छात्र साझा करना उचित समझता हो)
- रुचि तथा दिलचस्पी

(आ) विचार के स्तर पर

- मैं क्या बनना चाहता हूँ ? (किस प्रकार का पेशेवर कॅरियर तथा व्यक्तिगत लक्ष्य, मैं किस प्रकार स्वयं को प्रस्तुत करता हूँ, आदि)
- मैं अपने जीवन में क्या करना चाहता हूँ? (कॅरियर अथवा अन्यथा के माध्यम से जीवन में क्या करना चाहता हूँ, तत्पश्चात् छात्रों से बातचीत जारी रखने के लिए निम्नवत कहा जाए:–

  (क) अपने स्वयं के उद्देश्य, इच्छाओं, भावनाओं को समझना।

  (ख) अपने स्वयं के कार्यों/आचरण पर चिंतन करना

निर्दिष्ट कार्य – ए. 1

किसी ऐसे व्यक्ति पर 1 से 2 पृष्ठ लिखें जिन्होंने आपको काफी प्रभावित किया हो। आपने ऐसे व्यक्ति से पर्याप्त बातचीत की हो। ऐसा व्यक्ति मुख्य परिवार का सदस्य/विस्तृत परिवार का सदस्य/शिक्षक/पड़ोसी हो सकता है (छात्र को दो व्यक्तियों पर लेख लिखने को कहा जा सकता है, एक परिवार से तथा दूसरा जान–पहचान के दायरे से किसी व्यक्ति पर)।

छात्र हिन्दी, अंग्रेजी अथवा अपनी मातृभाषा में लिख सकते हैं। मातृ भाषा में लिखने को प्रोत्साहित करें।

क. 2. परिवार से मेरी आशाएं

छात्रों से उनके परिवार के बारे में बात करने को कहें। परिवार के सदस्यों, माता–पिता, भाई, बहन, दादा, दादी, चाचा, चाची आदि से मेरी आशाएं।

- यदि छात्र केवल भौतिक अथवा अभौतिक पहलुओं पर ही ध्यान केन्द्रित कर रहा हो तो आप बीच में प्रतिक्रिया दे सकते हैं।
- हम प्रतिक्रियाओं को दो श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं (मूर्त वस्तुएं) जो कि शरीर के लिए आवश्यक हैं तथा अभौतिक आवश्यकताएं (अमूर्त वस्तुएं) यथा प्रेम, आदर, देखभाल आदि जो कि मस्तिष्क के लिए आवश्यक हैं। ऐसा करने के बाद,मार्गदर्शक छात्रों के लिए आत्म निरीक्षण हेतु एक मंच तैयार कर सकता है ताकि वे अपने स्वयं के जीवन के लिए इन दो प्रकार की आवश्यकताओं को वरियताबद्ध कर सकें।
- निष्कर्ष निकालें कि हम अपने परिवार से क्या चाहते हैं।

निर्दिष्ट कार्य ए. 2

अपने इर्द–गिर्द लोगों को देखें, उनके व्यवहार पर ध्यान दें। किसका व्यवहार आपको ज्यादा प्रभावित करता है? जिसका आप अपने स्वयं के विकास, स्वयं के बोध के लिए अनुकरण (अर्थात् ऐसा करने का अथवा इससे भी बेहतर करने का प्रयास करना) कर सकते हैं।

ख. कृतज्ञता

ख. 1 परिवार के भीतर आशाएं

पिछले सत्र में, परिवार के भीतर अपेक्षाओं पर चर्चा की गई थी।जिसका उद्देश्य चर्चा का विषय भौतिक से अभौतिक पक्ष की ओर करना था। अब हमदायरे को परिवार से बढ़ाकर ऐसे लोगों तक ले जाते हैं जो हमें जीवन मापन करने में मदद करते हैं।

ख 2. अन्य लोगों की भूमिका की पहचान

आप छात्रों से ऐसे लोगों की सूची तैयार करने को कह सकते हैं जिन्होंने भूतकाल में उनके लिए कुछ किया है अथवा जो वर्तमान में उनके लिए कुछ कर रहे हैं।

उदाहरण के लिए, आज मैंने महाविद्यालय के भोजनालय/कैंटीन में भोजन किया। ऐसे कौन से लोग हैं जिन्होंने मेरी मदद की ताकि मैं अपना भोजन कर सकूं। कुछ छात्र उत्तर दे सकते हैं कि मैं अपने पिता जी का कृतज्ञ हूं जिन्होंने इसके लिए भुगतान किया। पूछें कि और कौन हैं? कुछ छात्र कह सकते हैं कि और कोई नहीं है।

एक उत्तर आ सकता है कि: माता–पिता ने भोजन का भुगतान किया, इसलिए संबंधित व्यक्तियों को अपना श्रेय प्राप्त हो गया है।

हम उत्तर दे सकते हैं : सोचो, क्या उनके योगदान का केवल पैसों के संबंध में पूर्णतः पुनर्भुगतान किया जा सकता है?

किसी व्यक्ति ने भोजन परोसा, किसी व्यक्ति ने खाना पकाया, कोई व्यक्ति बाजार से सामग्री लाया, कोई व्यक्ति खेत से बाजार तक खाद्य सामग्री लाया और किसी व्यक्ति ने उसे उगाया। ऐसे लोगों की लंबी श्रृंखला है जिन्होंने इस प्रक्रिया में हमारी मदद की। क्या आप जानते हैं कि किसने खाना परोसा,किसने खाना पकाया आदि। हम इनमें से अधिकांश को नहीं जानते हैं,ऐसा हो सकता है कि छात्रावास में हम यहां तक भी नहीं जानते हों कि आज किसने हमारा भोजन तैयार किया।

क्या आपने श्रृंखला में प्रत्येक व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता महसूस की?

उपयुक्त मामले में उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए, हम नीचे दी गई स्थिति का उल्लेख करना चाहते हैं: तेज गर्मी में सड़क पर किसी को इतनी प्यास लगी थी कि उसे पानी के बिना जीवित रहना मुश्किल प्रतीत होने लगा। आपने उसके साथ पानी साझा किया। अगले दिन वह व्यक्ति उस स्थिति की भरपाई करने के लिए पानी की बाल्टी के साथ आया। आप कैसा महसूस करेंगे? क्या आपके विचार से पैसा आपके योगदान की भरपाई कर सकता है?

सोचें कि क्या ऐसी स्थितियों में की गई मदद की किस प्रकार भरपाई की जा सकती है?

(हम छात्रों में एक ऊर्जा का संचार कर सकते हैं: इसी प्रकार की स्थिति में दूसरे लोगों की मदद की जाए तो कैसा रहेगा।)

ख 3. दूसरों के लिए हमारी मदद

हमने कितने लोगों की मदद की है? छात्रों को उनके पिछले अनुभव से विचार करने को कहें।

अब हम कितने लोगों की मदद कर रहे हैं? अधिकांश छात्र, यह महसूस कर सकते हैं कि वे दूसरों के लिए बहुत कम काम कर रहे हैं।

निर्दिष्ट कार्य ख. 1

ऐसे कम से कम एक व्यक्ति को जानने का प्रयास करें जिसे आप भली–भांति नहीं जानते हैं जो आपको भोजन उपलब्ध कराने अथवा जीवन यापन की स्थिति को बनाए रखने अथवा आपको शिक्षित करने आदि में मदद करने वाले लोगों की लंबी श्रृंखला में एक व्यक्ति है।

उस व्यक्ति को, उसके परिवार, पृष्ठभूमि, उसके विचारों तथा हाल–चाल के बारे में जानें। आज से एक सप्ताह उपरांत एक लेख लिखें। क्या आप कभी उसकी सेवाओं की भरपाई कर सकते हैं। {भविष्य के लिए : निर्दिष्ट कार्य को प्रेरण कार्यक्रम के पश्चात् भी चलाया जा सकता है। छात्रों को एक या दो व्यक्तियों और उनकी विस्तृत पृष्ठभूमि के बारे में जानने के लिए प्रोत्साहित करें। आप उनके बारे में कैसा महसूस करते हैं? क्या हम कभी उनके कार्यों की भरपाई कर सकते हैं? हम उनके लिए ज्यादा से ज्यादा क्या कर सकते हैं।}

ग. स्वयं तथा शरीर

ग.1.1 व्यापक रूप से सोचें

अनेकानेक स्तरों यथा, स्वयं, परिवार, छात्रावास, संस्थान, शहर, राष्ट्र, विश्व तथा प्रकृति में हम मानव द्वारा निर्वहन की गई भूमिका पर चर्चा करें। हमारे उत्तरदायित्व क्या है?

ग.1.2 इच्छाओं/आकांक्षाओं की सूची तैयार करें

छात्रों को 5 से 8 मिनट तक अपनी नोटबुक में इच्छाओं/आकांक्षाओं की सूची तैयार करने को कहें। कुछ छात्रों को अपनी कुछ इच्छाओं (यदि वे ऐसा करने में सहज हों) को पढ़ने के लिए कहें। व्यक्त की गई ऐसी इच्छाओं को सूची के रूप में बोर्ड (बुलेट प्वाईंट के रूप में, जिसमें प्रत्येक एक या दो संकेत शब्द हों) पर लिखें। दोहराव करने से बचें।

इच्छाओं को बोर्ड पर लिखने के बाद, आप पूछ सकते हैं कि इसका विचार कैसे आया। उदाहरण के लिए, कोई छात्र कह सकता है कि पैसा। 'क्यों' पूछने पर, वह कह सकता है कि वह सबसे धनवान व्यक्ति बनना चाहता है, दोबारा पूछने पर वह कह सकता है कि प्रसिद्धि के लिए अथवा जो कुछ भी मैं चाहूं उसे खरीदने के लिए। ये दो अलग–अलग चीजें हैं तथा पैसे के रूप में लिखी हुई इच्छा को बदलकर पैसा– प्रसिद्धि अथवा पैसा– चीजें खरीद सकता है, हो जाएगी। ध्यान रखें कि आप आलोचनात्मक न बन जाएं। किसी भी इच्छा का उपहास न करें अथवा मजाक न उड़ाएं न ही किसी और छात्र को ऐसा करने दें।

ग. 1.3 इच्छाओं का वर्गीकरण करें

बोर्ड के भली–भांति भर जाने के पश्चात् आप प्रत्येक इच्छा द्वारा पूरी की गई आकांक्षा के आधार पर इसे दो श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं:–

- मानसिक आवश्यकताएं
- भौतिक आवश्यकताएं

उदाहरण के लिए, वस्त्र हमारे शरीर को गर्मी अथवा ठंड से बचाने की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते है। ''ब्रांडिड कपड़े'' किस बात की पूर्ति करते हैं? क्या ब्रांड, आदर अथवा पहचान हेतु हमारी आवश्यकता की पूर्ति करने का प्रयास है?

क्या यह कभी कपड़ों द्वारा पूरी की गई आवश्यकताओं से बढ़कर होगा? चाहेयह ऊपरी तौर पर इसकी पूर्ति करे, क्या यह जारी रहेगा अथवा जल्द ही समाप्त हो जाएगा?

ग. 1.4 निष्कर्ष

अंत में, आप निम्नवत निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं:–

- यह सूची असंख्य नहीं बल्कि सीमित है। यह संख्या लगभग दहाईयों में होगी।
- अधिकांश इच्छाएं भौतिक आवश्यकता न होकर मानसिक होती हैं।

हम चाहते हैं कि हमारी इच्छाएं आपसी संघर्ष (इच्छाओं के बीच में) से मुक्त हों, आंतरिक अंतर्विरोधों अथवा हमारी सहजता में अंतर्विरोधों से मुक्त हों।

निर्दिष्ट कार्य ग. 1

- अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं की सूची तैयार करें (आप कक्षा में पहले ही तैयार की गई सूची का उपयोग कर सकते हैं)।
- प्रत्येक 'इच्छा' के लिए, 'क्यों' पूछें। जब आपको कोई उत्तर मिले तो दोबारा पूछें 'क्यों'! ऐसा करते रहें जब तक कि आपको इसके पीछे के विचार का पता न चल जाए।
- इसके पीछे की अंतर्निहित आवश्यकता को लिखें (भावनाओं अथवा शरीर हेतु आवश्यकता)।

ग. 2 स्वयं तथा शरीर की आवश्यकताएं

समय की निरंतरता, आवश्यकता के स्वरूप (परिणामात्मक अथवा गुणात्मक), असंख्य अथवा सीमित पूर्तिकर्ता, क्रियाकलाप आदि के संबंध में सारणी के रूप में 'स्वयं' तथा 'शरीर' की आवश्यकताओं के बारे में चर्चा करें (गौड़ और अन्य 2010 पृष्ठ 61–67)।

	स्वयं	शरीर
आवश्यकताओं के उदाहरण	विश्वास, आदर	भोजन, वस्त्र
आवश्यताएं हैं.....	आनंद	भौतिक सुविधाएं (सुविधा)
समय के अनुसार, आवश्यकताएं हैं	सतत	अस्थायी
मात्रात्मक संदर्भ में, आवश्यकताएं हैं	गुणात्मक (मात्रात्मक नहीं)	मात्रात्मक (सीमित मात्रा में)
आवश्यकताओं की पूर्ति होती है	सही समझ तथा उचित भावनाओं से	भोजन, वस्त्र, आदि
क्रियाकलाप हैं	इच्छाएं, विचार, आदि	श्वास लेना, हृदय– स्पंदन, आदि
क्रियाकलाप	जानना, मानना, पहचानना, आशा पर खरा उतरना	पहचानना, पूर्ण करना
इसका स्वरूप है	चेतन (अभौतिक)	भौतिक– रासायनिक (भौतिक)

(यदि समय हो तो) जानना, मानना, पहचानना और आशा पर खरा उतरना (जानना, मानना, पहचानना और निर्वाह करना) (गौड़ और अन्य, 2010; पृष्ठ 73 से 76)

ग. 2.1 स्वयं और शरीर की आवश्यकताओं के बीच भेद करना

निर्दिष्ट कार्य ग. 2

छात्रों द्वारा पूर्व में इच्छाओं/आकांक्षाओं की तैयार की गई सूची पर विचार करें तथा उन्हें ''स्वयं'' अथवा ''शरीर'' की अथवा दोनों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली इच्छाओं/आकांक्षाओं के रूप में वर्गीकृत करें। आपने पहले भी ऐसा किया होगा (गौड़ और अन्य 2010 पृष्ठ 78–83)।

निर्दिष्ट कार्य ग. 3

- ऐसे पांच उदाहरण दें जिसमें आप मानसिक तथा शारीरिक आवश्यकताओं को मिश्रित करते हैं।
- प्रत्येक उदाहरण के लिए, ऐसे कौन से मुद्दे हैं जिनके कारण आपस में सम्मिश्रण होता है और इसका समाधान करने के लिए क्या किया जा सकता है।
- इन्हें आपस में मिलाने के कारण समाज में हो रही कुछ समस्याओं से उन्हें कैसे जोड़ते हैं (उदाहरण के लिए भ्रष्टाचार, वैश्विक तापन), ऐसी चार समस्याएं रखें तथा उनकी चर्चा करें।

घ. समकक्ष का दबाव

घ.1 रूप-रंग से संबंधित दबाव

इस शीर्षक पर चर्चा करने के लिए निम्नवत परिदृश्य का उपयोग किया जा सकता है।

परिदृश्य 1

आपने सादे कपड़े पहने हैं परंतु आप ठीक ढंग से तैयार हैं और पार्टी में जा रहे हैं। हॉल में प्रवेश करने से पूर्व आप अंदर झांकते हैं और पाते हैं कि सब मंहगे/नए कपड़े पहने हुए हैं। आप क्या करेंगे? इससे पहले कि कोई आपको देख ले आप उस स्थान से चले जाएंगे, अथवा बिना किसी चिंता के सामान्य ढंग से अंदर जाएंगे?

मुद्दे/प्रश्न :

- क्या आप कपड़ों को अपनी पहचान (अर्थात् क्या आप उन्हें सम्मान से जोड़ते हैं) मानते हैं?
- क्या कपड़े आपका सबसे महत्वपूर्ण अंग हैं?
- क्या आप दूसरों की राय के अनुसार अपने आपको देखते हैं?

घ. 1.1 एक भिन्न स्थिति

परिदृश्य 1 में, विचार करें कि आपने मंहगे/नए कपड़े पहने हैं तथा दूसरे व्यक्ति ने सादे कपड़े पहने हैं। क्या आप इस स्थिति से अलग से प्रतिक्रिया करेंगे।

सांस्कृतिक मुद्दा

परिदृश्य 1 में, विचार करें कि 'सादे कपड़े' बनाम 'नए कपड़ों' की बजाय, स्थिति 'कुर्ता–पायजामा' बनाम 'कोट–पेंट' अथवा 'साड़ी'बनाम 'स्लैक्स–जींस' की हो। ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे?

घ. 1.2 मूल्यवान/महंगे उपकरण

परिदृश्य 2

आपके मित्र महंगे/मूल्यवान उपकरण जैसे मोबाइल, लैपटॉप आदि का उपयोग कर रहे हैं जिसे आपका परिवार खरीद कर नहीं दे सकता है।

मुद्दे/प्रश्न

क्या आपको आंतरिक दबाव महसूस होगा कि ये आपसे अलग वर्ग के लोग हैं?

क्या आपको उनसे मित्रता करने तथा उनके साथ सामान्य व्यवहार करने में हिचक होगी?

घ. 1.3 नवीनतम मॉडल के उपकरण

परिदृश्य 2 में यदि मुद्दा आकर्षक बाहरी रूप वाले नए मॉडल का हो, तो आपकी भावनाएं कैसी होंगी?

मार्गदर्शकों हेतु चेतावनी:

अनेक मानवीय मूल्यों की कक्षाओं में जाने के पश्चात्, छात्र (विषय की नब्ज को पहचानता हो) उपर्युक्त प्रश्नों का आदर्श/सटीक ढंग से उत्तर देगा ताकि वह इस बात को दर्शा सके कि वह इन छोटे–मोटे मुद्दों से ऊपर है। इस स्थिति में, आप उन्हें उत्तेजित कर सकते हैं कि वे ऐसा विचार करें कि क्या वे वास्तविक स्थिति में भी ऐसा ही करेंगे। आप इसे उनके जीवन की परिस्थिति के निकट ला सकते हैं। क्या वे इसे कल अपनी कक्षा में पहनेंगे?

घ. 2 समकक्ष दबावके अर्थ को स्पष्ट करना

घ. 2 समकक्ष दबाव –कुछ आधारभूत बातें

मित्र : एक 'मित्र' जिसमें आपकी आयु समूह का कोई व्यक्ति शामिल होता है।

मित्र समूह : समान पद/गुण/हैसियत वाले व्यक्ति।

दबाव : दबाव ऐसी भावना है जिसमें आप पर कतिपय चुनाव–अच्छा या खराब करने के लिए दबाव डाला जाता है।

घ. 2.2 समकक्ष दबाव की परिभाषा

मित्र दबाव, किसी व्यक्ति पर किसी मित्र या समूह का प्रभाव होता है जिससे व्यक्ति को मित्र समूह के अनुरूप बने रहने के लिए अपने रवैया, मूल्य, व्यवहार अथवा कार्यों में बदलाव करना पड़ता है।

(क) उपयुक्त सभी परिस्थितियों में, यदि किसी व्यक्ति को आंतरिक दबाव महसूस हो जिसके कारण उसमें हीन भावना अथवा महानता की भावना आ जाए तो कहा जा सकता है कि व्यक्ति दबाव में है।

समकक्ष दबाव एक मानसिक दबाव होता है। यदि कोई व्यक्ति किसी पूर्वाग्रह से ग्रस्त हो (जैसे विश्वास, विचार, भावना, व्यवहार तथा कार्यवाही) जो कि आसपास के लोगों के विचार से भिन्न हो।

समकक्ष दबाव अपने स्वयं के मूल्यों को परिवर्तित करने/बदलने को मजबूर करता है तथा अन्य के मूल्यों को अंगीकार करता है जबकि उनमें वास्तव में गुण न भी हो।

दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि जब हम पूर्वाग्रहों को अंगीकार करने का प्रयत्न करते हैं तब हम मित्र के दबाव में कार्य करते हैं ताकि हम अन्य व्यक्तियों को खुश कर सकें जबकि हम मानते हैं कि यह ठीक नहीं है।

(ख) मित्र समूह के दबाव के संबध में कुछ वक्तव्य

अपने मित्र समूह के साथ समय व्यतीत करने से मित्र समूह आपके जीवन को प्रभावित करते हैं चाहे आपको इसका पता भी न चले। आप उनसे सीखते हैं और वे आपसे सीखते हैं।

मित्र समूह बच्चों तथा किशोरों के सामाजिक तथा भावनात्मक विकास में बड़ी भूमिका निभाते हैं। उनका प्रभाव कम आयु में ही आरंभ हो जाता है और युवावस्था तक बढ़ता है।

मित्र समूह से प्रभावित होना मानव स्वभाव का अंग है परंतु कुछ लोग जल्द ही हार मान लेते हैं, और अन्य लोग उसका सामना करते हैं और अपने विचारों पर कायम रहते हैं। मित्र समूह हमेशा ही नकारात्मक नहीं होता है। परंतु उद्देश्य है कि स्वयं व्यवस्थित रहना है।

घ. 2.3 भौतिक/वास्तविक सुविधाओं का उद्देश्य, उदाहरण के लिए वस्त्र

हम इस मुद्दे को चर्चा के लिए छात्रों के समक्ष रख सकते हैं और अंततः इससे निम्नवत रूप में निष्कर्ष निकाला जा सकता है। वस्त्र का उद्देश्य है:

- जलवायु संबंधी आवश्यकताओं के अनुरूप शरीर की रक्षा करना; और
- सामाजिक मानदंडों के अनुरूप शरीर के भागों को ढकना।

महंगे तथा ब्रांडिड वस्त्रों (उदाहरण के लिए ब्रांडिड जींस तथा टी शर्ट) के संबंध में निम्नवत प्रश्न पूछा जाए। क्या मंहगे तथा ब्रांडिड कपड़ों को पहनना शरीर की मांग है अथवा शरीर को आरामदायक वस्त्रों की आवश्यकता है?

कौन से वस्त्र अधिक आरामदायक हैं सूती अथवा पॉलिएस्टर के वस्त्र?

महंगे अथवा ब्रांडिड कपड़े (अथवा जींस/टी–शर्ट) किस आवश्यकता की पूर्ति करते हैं?

उत्तर :पहचान, आदर आदि की आवश्यकता।

क्या यह शरीर की आवश्यकताएं हैं अथवा स्वयं की आवश्यकताएं है?

उत्तर : स्वयं

घ. 2.4 स्वयं की आवश्यकताओं की पूर्ति

क्या स्वयं की आवश्यकताओं की, भावनाओं अथवा वस्तुओं द्वारा पूर्ति की जा सकती है?

तत्पश्चात् छात्रों से यह जांच करने को कहा जाएगा कि क्या यही विचार भौतिक सुविधाओं जैसे मोबाइल फोन, लैपटॉप, घड़ी आदि पर भी लागू है।

उत्तर शायद यह होगा कि ब्रांड से उत्पाद की गुणवत्ता सुनिश्चित होती है। परंतु आप ब्रांड को कथित गुणवत्ता अथवा उसके मूल्य को प्रदर्शित करने के उद्देश्य के लिए खरीद रहे हैं। क्या आप अपने कपड़ों से ब्रांड के दिखाई देने वाले लेबल को उतारने के लिए तैयार होंगे।

स्वयं विचार कीजिए। नोट करें कि सही प्रस्ताव के आलोक में विचार किया जाना संभव है। उदाहरण के लिए स्वयं तथा शरीर की आवश्यकताओं को पृथक करना संभव है।

निर्दिष्ट कार्य घ. 1

- ऐसे एक– दो उदाहरण लीजिए जहां आपने मानसिक तथा शारीरिक आवश्यकताओं (अभ्यास 7.2) को सम्मिश्रित किया है तथा पुनर्जांच करें कि सम्मिश्रणक्यों हो रहा है।
- आपके मस्तिष्क में क्या अनिश्चितताएं आती है? (यह स्व–अवलोकन है)
- क्या आपको इच्छाओं के बीच कोई अंतर्विरोध नजर आता है?

ड. समृद्धि

ड. 1. मूल बिन्दु

समृद्धि एक ऐसी भावना है कि मेरे पास शारीरिक आवश्यकताओं से अधिक है। इसका अभिप्राय है कि:–

1. मैं अपनी शारीरिक जरूरतों को जानता हूं।
2. मेरे पास मेरी शारीरिक जरूरतों से अधिक है।
3. मैं जानता हूं कि मेरे पास मेरी शारीरिक जरूरतों से अधिक है।

उपर्युक्त (2) वस्तुनिष्ठ है परंतु (1) और (3) में स्वयं के ज्ञान से काम लेना होगा।

1. स्वयं का ज्ञान
2. वास्तविक आकलन

ऐसे ज्ञान के अभाव में, व्यक्ति अपने पास काफी वास्तविक संसाधन अथवा सम्पत्ति होने के बावजूद (गरीब) दरिद्रता का अनुभव करता है। क्या ऐसा नहीं होता है कि करोड़ रुपए प्राप्त करने के बावजूद भी दो भाई परिवार की सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए झगड़ते हैं।

ड.2. शर्तें

1. मुझे अपनी शारीरिक आवश्यकताओं को जानना चाहिए। मैं समृद्ध महसूस नहीं कर सकता हूँ यदि:–
   - मेरी आवश्यकताएं निश्चित नहीं हैं। दूसरे व्यक्ति के पास क्या कुछ है उसके आधार पर यह बदलती रहती हैं। यदि मेरी आवश्यकताएं इस बात पर आधारित हैं कि दूसरे व्यक्ति के पास क्या है, वे बदलती रहेंगी। उदाहरण के लिए, यदि किसी दूसरे व्यक्ति को मद 'क' प्राप्त हो जाती है अथवा यदि दूसरे व्यक्ति को बड़ी चीज 'ख' प्राप्त हो जाती है, यहां तक कि जब मेरी आवश्यकताएं पूर्ण भी हो जाती हैं तब भी मैं महसूस करता हूं कि मेरे पास ऐसी कोई चीज नहीं है।
2. मुझे स्वयं की आवश्यकताओं तथा शरीर की आवश्यकताओं के बीच अंतर करने में सक्षम होना चाहिए, और यह जानना चाहिए कि एक की जरूरत दूसरे के द्वारा पूरी नहीं की जा सकती है।

अगर मैं भौतिक वस्तुओं द्वारा स्वयं की जरूरतों को पूरा करने की कोशिश करता हूं, तो ये कभी भी पूरी नहीं हो सकती हैं।

- एक समय में निरंतर है, दूसरा असतत् है।
- एक गुणात्मक है, दूसरा मात्रात्मक (और सीमित) है।
- एक का संबंध भावनाओं से है, दूसरे का भौतिक चीजों से है।

उदाहरण के लिए, यदि कोई वस्तुओं द्वारा आदर प्राप्त करने की आवश्यकताओं को पूरा करने की कोशिश करता है (जैसे, एक बड़ी कार या बड़ा घर), तो इन्हें कभी पूरा नहीं किया जा सकता है। अथवा यदि मैं पद (भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी, राजनीतिज्ञ) द्वारा सम्मान पाने की कोशिश करता हूं, तो इसे प्राप्त नहीं किया जा सकता है अथवा अगर मैं इसे धन द्वारा प्राप्त करने का प्रयास करता हूं, तो इसे प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

3. इसी प्रकार, शरीर की जरूरतों को पूरा करने के लिए, मुझे भौतिक परिसम्पत्तियों की आवश्यकता है, न कि भावनाओं की। उदाहरण के लिए, किसी भी स्तर का सम्मान भूख को संतुष्ट नहीं करेगा।

ङ.3 परिणाम

यह आज की आम गलत धारणा है कि शरीर की जरूरतें एकमात्र जरूरतें हैं। यदि वे संतुष्ट होती हैं, तो सभी आवश्यकताएं पूरी हो जाएंगी।

आज, शिक्षा किसी भी प्रकार के मूल्य के विचार के बिना कौशल सिखाती हैं। परिणामस्वरूप, स्वयं की आवश्यकताएं अधूरी रह जाती हैं।

मुख्य रूप से दो प्रकार के लोग होते हैं:

- साधन विहीन दुखी दारिद्र (एस.वी.डी.डी.) (अर्थात बिना संसाधनों, दुखी और वंचित)
- साधन सम्पन्न दुखी दारिद्र (एस.एस.डी.डी.) (अर्थात संसाधनों सहित दुखी और वंचित)
- हमारी शिक्षा प्रणाली छात्रों को ज्यादा से ज्यादा एस.वी.डी.डी. से एस.एस.डी.डी. तक ले जाती है। इस बात की जाँच करें: आपके माता–पिता क्या कहते हैं कि आपको आईआईटी की शिक्षा ग्रहण के बाद क्या मिलेगा?

आवश्यकता निम्नवत का स्तर प्राप्त करने की है:

- साधना सम्पन्न सुखी समृद्धि (एसएसएसएस) (यानी संसाधनों के साथ, सुखी और समृद्ध)।

यह तभी हो सकता है जब हम समझेंगे (हमारे पास ज्ञान है) मेरी क्या आवश्यकताएं हैं, यह कि स्वयं और शरीर की आवश्यकताएं अलग–अलग हैं, और इन दोनों को अलग–अलग पूरा करने की आवश्यकता है। यदि कोई व्यक्ति दोनो जरूरतों को मिला देता है, तो किसी को भी पूरा नहीं किया जा सकता है।

ङ.4. उन्नत विषय

समृद्धि भविष्य की ओर भी बढ़ती है। न केवल अब, मेरे पास मेरी जरूरतों से अधिक है, बल्कि भविष्य में भी मेरे पास मेरी जरूरतों से अधिक होगा।

यह निष्कर्ष दो मुख्य बोध से निकलता है:

1. प्रकृति के पास मेरे और सभी लोगों की आवश्यकता से अधिक संसाधन हैं।

   (भारत अपने सभी लोगों की आवश्यक से 2.6 गुना अधिक भोजन का उत्पादन करता है। लेकिन, फिर भी इतने सारे लोग भूखे क्यों हैं? गलत सामाजिक व्यवस्था कुछ लोगों के लिए कमी पैदा करती है, दूसरों के लिए धन। कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनके पास खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं। ऐसा तब होता है जब रिश्तों की समझ की कमी होती है अथवा जो कुछ भी अतिरिक्त है, उसके अलग होने की अनिच्छा होती है)।

2. अंततः, संबंधों से समृद्धि की भावना प्रस्फुटित होती है। यही हमें भविष्य के बारे में आश्वासन देता है। हम आगे रिश्तों पर चर्चा करेंगे।

निर्दिष्ट कार्य ङ.1

1. समृद्धि का क्या अर्थ होता है? जीवन के ऐसे क्षेत्रों (जैसे, भोजन, मोबाइल फोन, घर) का उल्लेख करें जहां आप समृद्ध महसूस करते हैं और उन क्षेत्रों का उल्लेख करें जहां आप ऐसा महसूस नहीं करते हैं। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

2. अपने जीवन से उदाहरण दें जहां आपको लगता है कि शरीर की जरूरतों को स्वयं की जरूरतों के साथ मिलाने के कारण समृद्धि में कमी हुई है (अर्थात्, आप भौतिक चीजों द्वारा स्वयं की आवश्यकता को पूरा करने की कोशिश कर रहे हैं, जिन्हें संतुष्ट नहीं किया जा सकता है)। आप इसके बारे में क्या करेंगे?

च. परिवार में संबंध

च.1 सात संबंध

1. माता–पिता बच्चे (माता और पिता, पुत्र– पुत्री)
2. शिक्षक–छात्र (गुरू–शिष्य)
3. भाई–बहन (भाई–बहन)
4. दोस्त (मित्र)
5. साथी–सहयोगी (कार्य स्थल पर नेता–सहायक)
6. पति–पत्नी (पति–पत्नी)
7. प्रणाली संबंधी (व्यवस्थागत सम्बंन्ध)

च.2 संबंधों में अपक्षपात (न्याय)

हमने अपेक्षाओं पर चर्चा की है। अब हम संबंधों में भावनाओं (भाव) का परिचय देना चाहेंगे। भावनाएँ हम (अर्थात् स्वयं में) में होती हैं । हम भावनाओं का अनुभव कर सकते हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि संबंधों में भावनाओं के कारण अपेक्षाएं होती हैं। हम आमतौर पर मानते हैं कि अपेक्षाएं वस्तुओं के लिए होती हैं। उदाहरण के लिए, माता–पिता और बच्चों के संबंधों में अपेक्षा ममता (देखभाल की भावना), वात्सल्य (मार्गदर्शन की भावना) की भावनाएं होती हैं। इसका परिणाम यह होगा कि भोजन आदि उपलब्ध कराया जाएगा परंतु प्रतिलोमतः नहीं होगा। यदि केवल वस्तुओं का ही लेन–देन होता है, तो यह एक संबंध नहीं है, बल्कि एक लेनदेन या सौदा है।

भावना की अपेक्षा का पूरा होना न्याय (न्याय) की ओर ले जाता है। न्याय (न्याय) में चार तत्व शामिल हैं:

1. दो लोगों में संबंधों में मूल्यों की स्वीकृति/ पहचान (मूल्य की पहचान),
2. संबंधों में अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए किया गया प्रयास (मूल्य का निर्वाह),
3. मूल्यों की पूर्ति और उसकी सफलता आदि के लिए प्रयासों का सही मूल्यांकन, और
4. सफलता के मामले में, पारस्परिक आनंद (उभय–तृप्ति) की भावना।

उदाहरण के लिए, माता–पिता और बच्चों के संबंधों में माता–पिता स्नेह की भावना को पहचानते हैं, और बच्चे कृतज्ञता की भावना को पहचानते हैं। यदि बच्चा भूखा है, तो माता–पिता बच्चे को देखभाल (ममता) की भावना के साथ खिलाने का प्रयास करते हैं और बच्चा, बदले में, संतुष्टि और कृतज्ञता महसूस करता है। इस प्रकार, मूल्यों की पूर्ति की प्रक्रिया में, माता–पिता के साथ–साथ बच्चे को खुशी महसूस होती है जो उभय–तृप्ति की ओर ले जाती है।

च. 2.1 चर्चा के लिए संबंधित विषय

- सम्बध और सम्पर्क
- संबंधों में मूल्य (मूल्य) होते हैं

च. 2.2 अनुवर्ती प्रश्न निम्नवत हैं:

1. क्या आप केवल कुछ अवसरों पर अथवा प्रत्येक पल ही न्याय चाहते हैं? उत्तरः प्रत्येक पल

2. क्या आपको लगता है कि यह न्यायालय का ही क्षेत्राधिकार है जो न्याय को सुनिश्चित कर सकता है अथवा परिवार के सदस्यों के बीच केवल खुले दिल से की गई चर्चा न्याय को सुनिश्चित करने का तरीका है?

   उत्तरः परिवार के सदस्यों के बीच चर्चा।

इस बात पर विस्तार से बताएं कि न्यायालय किस तरह से न्याय सुनिश्चित नहीं कर सकते। न्यायालय केवल निर्णय (फैसला) की घोषणा कर सकता है, उभय–तृप्ति सुनिश्चित नहीं कर सकता है। अगर सभी पक्ष अपेक्षाओं को पूरा करने में अपनी भूमिका को पहचानते हों तो वहां न्याय होगा।

च.3 लेन–देन और संबंध

एक लेन–देन उस स्थिति में होता है, जहां दो लोग एक साथ काम करते हैं अथवा कुछ सहमत शर्तों के अनुसार किसी चीज़ का आदान–प्रदान करते हैं। एक समाज में कई कार्य लेन–देन के माध्यम से पूरे किए जाते हैं।

किसी संबंध में, अपेक्षाएं भावनाओं से जुड़ी होती हैं। किसी संबंध और लेनदेन के बीच अंतर यह है कि एक संबंध में, भावनाएं प्राथमिक होती हैं।

च.3.1 एक उदाहरण– उपहार के माध्यम से रेस्तरां का संचालन

निम्नलिखित उदाहरण पर विचार करें। एक परिवार एक रेस्तरां में गया, और भोजन किया। इसके खत्म होने के बाद उन्होंने बिल मांगा। बिल ने उन्हें चौंका दिया। इसमें भोजन के लिए खर्चों को सूचीबद्ध किया, लेकिन अंत में, इसमें कहा गया था कि आपको कुछ भी भुगतान करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आपका बिल चुका दिया गया है! आश्चर्यचकित परिवार ने चारों ओर देखा, यह पूछने पर, कि हमारे बिल का भुगतान किसने किया है?

वेटर ने जवाब दिया कि पिछले ग्राहक ने बिल का भुगतान किया था। जैसे ही परिवार ने उठना शुरू किया, वेटर ने पूछा, क्या आप अगले ग्राहक को 'भोजन उपहार' देना चाहेंगे?

च. 3.2 भावनाओं को महसूस करें

छात्रों से पूछा गया था कि अगर आप उस स्थिति में होते तो आप क्या महसूस करते? कुछ हंसी वाली टिप्पणियों के बाद, उन्होंने जवाब दिया कि यह निसंदेह अच्छा लगेगा। जब उनसे आंखें बंद करने और उन भावनाओं को महसूस करने के लिए कहा गया, तो कुछ ने कहा कि सकारात्मक भावनाएं होंगी, वे अज्ञात दाता के प्रति कृतज्ञता महसूस करेंगे, आदि। यह भावनाएं हैं जिन्हें हमने पूर्व में ''निरंतर खुशी'' कहा है।

जब ग्राहक उपहार देंगे, तो उन्हें भी खुशी मिलेगी कि वे किसी के लिए एक उपहार छोड़ रहे हैं (एक सेवा के लिए भुगतान करने की बजाय)।

च.3.3 जीवन की श्रृंखला

छात्रों में से एक ने बताया कि यही है, जो जीवन है। हमें अपने पूर्वजों, अज्ञात लोगों और व्यापक रूप से मानवता से उपहार मिलते हैं। और जब हम गुजरते हैं, तो हम आने वाली पीढ़ी के लिए उपहार छोड़ देते हैं। यही जीवन है।

च.3.4 उपहार की संस्कृति

जब हम एक ऐसे समाज का निर्माण करते हैं जिसमें उपहार संस्कृति (देना और देना) अंतर्विष्ट हो, तो यह आसपास सभी लोगों को खुशी देता है (देने वाले के साथ–साथ पाने वाले को भी, जो इसे बदले में किसी और को दे सकता है)।

उदाहरण में, जब पूछा गया कि आप अगले ग्राहक के लिए कितने पैसे छोड़ेंगे, तो कई छात्रों ने जवाब दिया कि वे बिल से थोड़ी सी अधिक राशि छोड़ देंगे।

अब दो स्थितियों पर विचार करें, पहली, ऊपर दी गई, और दूसरी, एक सामान्य रेस्तरां की। दोनों मामलों में, भोजन खाया जाता है, और पैसे का भुगतान किया जाता है। हालाँकि, पूर्व की स्थिति में, भावनाएँ भी उत्पन्न होती हैं!

च. 4 ईमानदारी भरा लेन–देन

बातचीत लेन–देन में बदल गई, हम इसके खिलाफ नहीं हैं। लेकिन लेन–देन, जाहिर है, एक ईमानदारी भरा लेनदेन होना चाहिए।

क्या उचित है? निष्पक्षता केवल कानूनी दृष्टिकोण से निर्धारित नहीं होती है, जो हमें केवल न्यूनतम संतोष दे सकती है।

एक प्रज्ञावान समाज अपनी संस्कृति और पद्धतियों का निर्माण करता है जिसमें भावनाएं इसकी पद्धतियों, लेनदेन में उत्पन्न हो जाती हैं अथवा रोजाना के कामकाज में बढ़ जाती हैं,

च. 4.1 उदाहरण– एक स्टेशन पर चाय विक्रेता

मैं ठंडी सर्द रात में दिल्ली से कानपुर की रेलगाड़ी में यात्रा कर रहा था। यह 3 जनवरी, 2011 की रात थी और समय लगभग 5 बजे था। रेलगाड़ी रुक गई, और मैं उठ गया।

खिड़की से झाँकने पर, मैंने देखा कि यह एक बहुत छोटा स्टेशन था, जहाँ प्लेटफार्म भी काफी कम ऊँचाई पर था। नीचे उतरने पर, हमें पता चला कि हमारी रेलगाड़ी के ठीक तीन रेलगाड़ी आगे एक बड़ी दुर्घटना हुई है।

आगे क्या होगा यह जानने के लिए इंतजार करते हुए, मैं एक चाय की दुकान पर गया। यह एकमात्र चाय की दुकान थी, और यह रेलगाड़ी और और सर्द सुबह के कारण भरी हुई थी। चाय की दुकान के मालिक ने घोषणा की कि: चाय सभी को समान मूल्य पर परोसी जाएगी जिसमें चाय की पत्तियां, चीनी और दूध का समान अनुपात होगा, मैंने दूध के लिए फोन किया है, और जल्द ही अधिक दूध आ जाएगा और तभी से अपने स्कूटर पर दूध के कंटेनरों के साथ कुछ दूध वाले आने लगे।

च.4.2 आधुनिक शिक्षा द्वारा प्रदत्त मूल्य

मान लीजिए कि विक्रेता ने कहा होता कि मैं चाय की कीमत बढ़ाकर 10 रुपए कर रहा हूं, तो आपको कैसा लगता? अधिकांश छात्रों ने कहा कि वे ठगा हुआ महसूस करते। लेकिन कानूनी तौर पर, जब तक उसने पहले से नई कीमत की घोषणा की है, यह धोखा नहीं है।

यदि कोई व्यक्ति अर्थशास्त्र या एमबीए में शिक्षित हो, तो वह चाय विक्रेता के बारे में क्या कहेगा?

शायद उसने कहा होता, "वह मूर्ख है, उसे कीमत बढ़ानी चाहिए थी। "और वह इसे आपूर्ति और मांग के सिद्धांत का हवाला देकर इसे सही ठहराएगा।

ऐसे पढ़े–लिखे व्यक्ति ने कहाँ पढ़ाई की होगी? शायद हमारे सबसे अच्छे बिजनेस स्कूलों में और एमबीए किया हो। तो हमारे सर्वश्रेष्ठ संस्थान हमारे सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों के माध्यम से हमारे सर्वश्रेष्ठ छात्रों को यह सिखा रहे हैं!

च. 4.3 सामाजिक मूल्य

चाय विक्रेता जब चाय की कीमतें नहीं बढ़ा रहा है तो वह किन मूल्यों के तहत काम कर रहा है? यह वह मूल्य है जो कहता है कि किसी व्यक्ति की जरूरत अथवा बेबसी के समय में उसका फायदा उठाना गलत है। और उसका व्यवहार एक अच्छी भावना उत्पन्न करता है।

चाय के लिए भुगतान के समय, कई लोग भुगतान करने और जाने के इच्छुक थे। मैंने केवल 50 रुपए के नोट का भुगतान किया और विक्रेता के पैसे वापस करने से पहले चला गया। मैं उस विक्रेता के मूल्यों के प्रति अपना आभार प्रकट करने के लिए कम से कम यह तो कर ही सकता था।

प्रज्ञावान समाज अपनी पद्धतियों और आचार की नींव डालते हैं जो सामान्य लेनदेन में भी मूल्यों/भावनाओं को बढ़ावा देते हैं।

च.5 न्याय समरसता की ओर जाता है

न्याय की भावना पहले परिवार के स्तर पर अनुभव या महसूस की जाती है। तत्पश्चात् यह समाज स्तर तक और धीरे–धीरे वैश्विक परिवार तक फैलती है (वसुधैव कुटुम्बकम)।

च.6 नौ मूल्य (मूल्य)

संबंधों में नौ प्रकार की भावनाएं या मूल्य होते हैं।

1. भरोसा (विश्वास)
2. प्रतिष्ठा (सम्मान)
3. प्रेम (स्नेह)
4. देखभाल (ममता)
5. मार्गदर्शन (वात्सल्य)
6. आभार (कृतज्ञता)
7. आदर (श्रद्धा)
8. महिमा (गौरव)
9. प्रेमभाव (प्रेम)

छ. संबंधों में मूल्यः भरोसा (विश्वास)

छ.1.1 परिभाषा

प्रत्येक व्यक्ति खुश और समृद्ध रहना चाहता है। अपने भीतर यह आश्वासन कि दूसरा इंसान मुझे लगातार और बिना शर्त खुश और समृद्ध बनाना चाहता है, इसे विश्वास के रूप में जाना जाता है।

छ.1.1 विश्वास में अन्वेषण करना

अपने आप से पूछकर निम्नलिखित चार कथनों को सत्यापित करें कि क्या आप सहमत हैं: चाहत अथवा इच्छा के बारे में प्रस्ताव

छात्रों के संभावित उत्तर (बोर्ड पर वास्तविक उत्तर लिखें)

1. मैं स्वयं को हमेशा खुश रखना चाहता हूं। # हाँ
2. मैं दूसरे व्यक्ति को हमेशा खुश रखना चाहता हूं। # हाँ

3. अन्य लोग स्वयं को हमेशा खुश रखना चाहते हैं # हाँ

4. अन्य लोग हमेशा मुझे खुश रखना चाहते हैं # ?

अब, अपनी क्षमता के आधार पर निम्नलिखित चार कथनों को सत्यापित करें: सक्षमता या योग्यता के बारे में प्रस्ताव। #

संभावित उत्तर:

1. मैं हमेशा स्वयं को खुश रख सकता हूं। #?

2. मैं दूसरे व्यक्ति को हमेशा खुश रख सकता हूं। #?

3. दूसरा व्यक्ति स्वयं को हमेशा खुश रख सकता है। #?

4. दूसरा व्यक्ति हमेशा मुझे खुश रख सकता है # ??

एक मित्र का उदाहरण लें जिसके साथ आपका विवाद था, जिसके बाद आप उससे नाखुश थे

- चार प्रश्नों का पहला सेट (1–4), मेरी मंशा अथवा चाहत से संबंधित हैं (दूसरे शब्दों में, मैं वास्तव में क्या बनना चाहता हूं)।
- अगले चार (1–4), मेरी क्षमता अथवा योग्यता से संबंधित हैं, दूसरे शब्दों में, क्या मैं जो चाहता हूं उसे करने में सक्षम हूं।

मंशा पर संदेह बनाम क्षमता पर संदेह के बीच विरोधाभास। क्षमता के संदर्भ में, विश्वास को देखा जा सकता है: इस बात से सदा आश्वस्त रहना कि दूसरे का इरादा हमेशा सही है। आइए, हम सामान्य रूप से, जांच करें, जहां हम मंशा और क्षमता के संबंध में निर्णय लेते हुए कहां गलत हो जाते हैं।

1. हम आमतौर पर स्वयं को अपनी मंशा और दूसरों का उनकी क्षमता के आधार पर मूल्यांकन करते हैं।

2. हम शायद ही कभी अपनी क्षमता और दूसरे के मंशा पर ध्यान देते हैं।

उपरोक्त दोनों कथनों के कुछ उदाहरण मेरी धारणा को प्रदर्शित करते हैं: दूसरे के बारे में मेरी धारणा # अपने बारे में मेरी धारणा।

दूसरे ने एक ग्लास तोड़ा # मेरे हाथ से फिसलने के कारण ग्लास टूट गया, दूसरा व्यक्ति समय पर नहीं आया # मैंने समय पर पहुंचने के लिए बहुत कोशिश की।

दूसरे गलती जानबूझकर करते हैं # मैं दुर्घटनावश गलती करता हूं। दूसरे की गलती है # मैं सही हूं।

यदि हम दूसरों की मंशा देख सकते, तो यह चमत्कार कर सकता है, जैसा कि नीचे दर्शाया गया है:

1. यदि हमें दूसरे की मंशा पर विश्वास है, तो हमें दूसरे से जुड़ने का अहसास होता है और यदि दूसरे व्यक्ति में कमी भी हो, तो अनायास ही उसकी क्षमता को बेहतर बनाने के लिए दूसरे की मदद करना शुरू कर देता है।

2. यदि हमें दूसरे की मंशा पर विश्वास नहीं हो तो, हममें दूसरे के साथ विरोध की भावना पैदा होगी, जो लड़ाई, विवाद और अंततः कड़वाहट की ओर ले जाता है।

छ.1.2 आगे की खोज

'क' ने 'ख' से एक ऐसी मांग/ आशा/ चाहा जो 'ख' पूर्ण न कर सका। आइए जानें कि ऐसी आशाओं का पूर्ण नहीं कर पाने के लिए 'क' अथवा 'ख'– कौन उत्तरदायी है। मार्गदर्शक छात्रों से ऐसे अनेक कारणों के बारे में पूछ सकता है, जिनके कारण 'ख', 'क' की अपेक्षाओं की पूर्ति नहीं कर पाया। संभावित प्रतिक्रियाएँ निम्नलिखित हो सकती हैं:

- 'ख'के पास इच्छित वस्तु नहीं है।
- 'ख', 'क' की सहायता नहीं करना चाहता है।
- अतीत में, 'क' ने 'ख'की अपेक्षाओं की पूर्ति नहीं की थी। और इसी तरह के उदाहरण।

कुछ निपुणता के साथ, मार्गदर्शक प्रत्येक प्रतिक्रिया से यह साबित करेगा कि 'क' अपनी अपेक्षाओं की पूर्ति करवाने के लिए 'ख' में अपेक्षित विश्वास पैदा नहीं कर पाया, इसलिए 'क' की अपेक्षाओं की पूर्ति नही करने का संपूर्ण दोष केवल 'क' पर ही है।

शिक्षाः दूसरे का इरादा हमेशा सकारात्मक होता है (स्वयं की भांति) केवल क्षमता की ही कमी हो सकती है।

छ.1.3 निर्दिष्ट कार्य छ.1

1. उन व्यक्तियों के नाम सूचीबद्ध करें जिनकी मंशा पर आपको पूर्ण विश्वास है – लगातार और बिना शर्त।
2. उन व्यक्तियों का नाम बताइए जिन्हें उपयुक्त सूची के आप–पास तो महसूस करते हैं लेकिन उपयुक्त सूची में नहीं आते हैं। आपको उनमें पूर्ण विश्वास की कमी क्यों प्रतीत होती है? वर्णन करें।
3. इस बात की भी सूची तैयार करें कि कितने लोगों को आप पर पूरा भरोसा है। आप कैसे जानते हैं?

ज. संबंधों में मूल्यः आदर (सम्मान)

ज. 1. परिभाषा

सम्मान = सम् (सही)+ मान (मूल्यांकन)

सम्मान = सही मूल्यांकन

ज.2. अनादर (अपमान)

जब भी मूल्यांकन सही नहीं होता है, यह अपमान होता है। अगर हम ध्यान दें, तो हम पाएंगे कि अपने दिन–प्रतिदिन के संबंधों में, हम निम्नलिखित चार में से कोई न कोई काम करते हैं, जिससे अनादर होता हैः

अधिक मूल्यांकन (अधि– मूल्यांकन) जितना मूल्यांकन किया गया है उससे अधिक का मूल्यांकन करना।

जितना मूल्यांकन किया गया है उससे कम मूल्यांकन करना (अव–मूल्यांकन)।

अन्यथा मूल्यांकन (अन्यथा–मूल्यांकन) मूल्यांकन नहीं के अलावा अन्य के लिए मूल्यांकन (अमूल्यन अथवा निर्मूल्यन) मूल्यांकन करने हेतु उपेक्षा करना।

ज.3 सही मूल्यांकन स्वंय (आई) के आधार पर (एक मानव का) सही मूल्यांकन

यह देखकर कि दूसरा मेरे जैसा है बिंदु(क) से (ग):

1. हमारा उद्देश्य एक ही है क्योंकि हमारी प्राकृतिक स्वीकृति समान है।
2. जैसा कि मैं रहना चाहता हूं और लगातार खुश रहना चाहता हूं, वैसे ही दूसरे भी चाहते हैं।
3. हमारा उद्देश्य एक ही हैः मेरा उद्देश्य है संपूर्ण जीवन को खुशी से जीना है।
4. सभी स्तरों पर सद्भाव को समझना और जीना, ऐसी ही यह दूसरों के लिए भी है। क्षमता (गुंजाइश) एक ही हैः मेरे पास समझने (समझ) की क्षमता है और इसी तरह दूसरों के पास भी है। जैसा कि मैं लगातार इच्छा, विचार और चयन के रूप में काम करता हूं, वही दूसरे भी ऐसी ही करते हैं।

5. अंतर केवल समझने के स्तर पर है (केवल जानकारी ही नहीं):

- अगर दूसरे के पास मुझसे बेहतर समझ है, तो मुझे दूसरे से समझने की जरूरत है।
- अगर दूसरे को मेरे मुकाबले कम समझ है, तो मैं दूसरे की समझ–बूझ को बेहतर बनाने के उत्तरदायित्व को स्वीकार करता हूं।

ज. 4. मानव के मूल्यांकन में भयंकर त्रुटि

मानव 'स्वयं और शरीर' का सह–अस्तित्व है। 'शरीर' की जरूरतें 'स्वयं' की जरूरतों से अलग हैं। 'शरीर' के और 'स्वयं' के क्रियाकलाप भी भिन्न हैं। लेकिन हम शरीर अथवा समाज के आधार पर मनुष्यों का मूल्यांकन करते हैं:

- रुप (शरीर) के आधार पर: उदाहरण के लिए जाति, रंग, आकार, लिंग।
- बल (शरीर) के आधार पर: उदाहरण के लिए शारीरिक शक्ति।
- पद के आधार पर: उदाहरण के लिए हैसियत।
- धन के आधार पर: उदाहरण के लिए धन, पैसा।
- मान्यताओं के आधार पर: उदाहरण के लिए जाति, धर्म, विचारधारा और अन्य मान्यताओं के आधार पर।

इस प्रक्रिया में, व्यक्ति पूरी तरह से स्वयं की उपेक्षा करता है। यह एक गंभीर त्रुटि है और मानव जाति का अनादर है। इससे नस्ल, राष्ट्रीयता, जाति, धर्म, विचारधारा आदि के आधार पर मनुष्यों के बीच भेद किया है और यह संघर्ष का प्रमुख कारण है।

निर्दिष्ट कार्य ज.1

आपकी पांच अन्य लोगों के साथ हुई चर्चाओं का उल्लेख करें और जाँचें कि क्या आपने उनका मूल्यांकन 5 गलत गुणों के आधार पर किया है, जैसे कि रूप, बल, पद, धन और बुद्धि।

आभार

प्रो0 राजीव संगल, आई.आइ.टी., बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व निदेशक की अध्यक्षता में निम्नवत सदस्यों– प्रो0 (डॉ.) आर.पी. बनर्जी, निदेशक, ई.आई.आई.एल.एम., कोलकाता; डॉ अखिलेश कुमार सिंह, निदेशक, ई.एम.आर.सी., डी.ए.वी.वी., इंदौर; प्रो0 योगेन्द्र वर्मा, पूर्व सम– कुलपति, सी.यू.एच.पी., शिमला; प्रो0 संजय गुप्ता, आई.एम.एस., बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी; प्रो0 रमनचार्ला प्रदीप कुमार, कुल सचिव, आई.आई.आई.टी., हैदराबाद, प्रो0 स्वामी शास्त्राजनानंदा, प्राचार्य, रामकृष्ण मिशन विद्यामंदिर बेलूर मठ, पश्चिम बंगाल; डॉ.(श्रीमती) रेणू बतरा, अपर सचिव, वि0 अ0 आ0 (समन्वयक) की विशेषज्ञ समिति की सहायता से दीक्षारंभ–छात्र प्रेरण कार्यक्रम हेतु मार्गदर्शिका तैयार की गई है। श्रीमती मेघा कौशिक, शिक्षा अधिकारी, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने समिति की सहायता की।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग इस दस्तावेज को तैयार करने में समिति द्वारा किए गए प्रयासों को स्वीकार करता है और इसकी सराहना करता है।

सत्यमेव जयते

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

गुणवत्ता अधिदेश

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

उद्देश्य

- छात्रों के लिए स्नातक परिणामों में सुधार
- छात्रों का समाज / उद्योग वर्ग के साथ सामंजस्य
- छात्रों को आवश्यक व्यावसायिक और व्यवहार कौशल
- यह सुनिश्चित करना कि शिक्षक रिक्तियाँ स्वीकृत क्षमता से 10% से अधिक न हों
- वर्ष 2022 तक, प्रत्येक संस्थान को न्यूनतम 2.5 का NAAC स्कोर अर्जित करना ह

उच्चतर शिक्षा संस्थानों द्वारा निम्नलिखित पहल की जानी हैं :-

1. विद्यार्थियों के लिए आरंभिक प्रेरण कार्यक्रम-दीक्षारंभ।
2. अध्ययन- निष्कर्ष आधारित पाठ्यक्रम रचना-नियमित अंतराल पर पाठ्यक्रम में परिशोधन (LOCF)।
3. प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया हेतु सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना -MOOC, और ऑनलाइन उपाधियाँ।
4. विद्यार्थियों हेतु व्यावहारिक कौशल-जीवन कौशल
5. प्रत्येक संस्थान हेतु समाजिक एवं उद्योग वर्ग से संपर्क, प्रत्येक संस्थान, ज्ञान के परस्पर आदान-प्रदान तथा ग्रामीण समुदायों की समग्र सामाजिक/आर्थिक समुन्नति हेतु कम से कम 5 गावों का अभिग्रहण करेगा। नियोजन योगयता में सुधार करने के लिए विश्वविद्यालय-उद्योग के बीच संपर्क को बढ़ावा देना।
6. परीक्षा प्रणाली में सुधार-परिकल्पना की जांच एवं अनुप्रयोग।
7. पाठ्यक्रम के पूरा होने के पश्चात, विद्यार्थि प्रगति की जानकारी रखना व पूर्व छात्र नेटवर्क।
8. संकाय प्रेरणा कार्यक्रम (FIP) शिक्षण में वार्षिक पुनश्चर्या कार्यक्रम (ARPIT) तथा शिक्षा प्रशासकों के लिए नेतृत्व प्रशिक्षण (LEAP)।
9. भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए परा-विद्या संबंधी अनुसंधान योजना (STRIDE) और कन्सोर्टियम फॉर एकेडेमिक एंड रिसर्च एथिक्स (CARE)
10. गैर प्रत्यायित संस्थानों को मार्गदर्शन उपलब्ध कराना (परामर्श)

उच्चतर शिक्षा संस्थान (HEIs) गुणवत्ता सुधार हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों को 2022 तक प्राप्त करने का प्रयास करेंगे

- विद्यार्थियों के लिए स्नातक परिणामों में सुधार, जिससे की उनमें से कम से कम 50 प्रतिशत विद्यार्थी अपने लिए रोजगार/ स्व-रोजगार सुरक्षित कर सकें, या उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाएँ।
- विद्यार्थियों का समाज/उद्योग वर्ग के साथ सामंजस्य स्थापित करना जिससे कि कम से कम दो-तिहाई छात्र, संस्थानों में अपने अध्ययन के दौरान, सामाजिक गतिविधियों मे भागीदारी कर सकें।
- विद्यार्थियों को आवश्यक व्यावसायिक और व्यवहार कौशल का प्रशिक्षण प्रदान करन जैसे सामूहिक कार्य, सम्प्रेषण कौशल, नेतृत्व कौशल, समय-प्रबंधन कौशल आदि मे पारंगत करना, मानवीय मूल्यों एवं व्यवसायगत नीतियों का संचार करना, नवप्रवर्तन / उद्धमशीलता तथा विद्यार्थियों मे समालोचनात्मक चिंतन की भावना को जाग्रत करना तथा इन प्रतिभाओं के प्रदर्शन के लिए अवसर प्रदान करना।
- यह सुनिश्चित करना की शिक्षक रिक्तियों में किसी भी समय पर, स्वीकृत क्षमता के 10 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि नहीं हो तथा शत-प्रतिशत शिक्षक अपने संबन्धित ज्ञान क्षेत्र में नवीनतम एवं उभरती जानकरियों एवं शिक्षण विधियों का ज्ञान रखते हों, जिससे वो विद्यार्थियों को प्रभावशाली तरीके से विषय को समझा सकें।
- वर्ष 2022 तक, प्रत्येक संस्थान, न्यूनतम 2.5 प्राप्तांकों सहित राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा प्रमाणित हो।

उच्चतर शैक्षिक संस्थानों द्वारा की जाने वाली पहल

ज्ञान–विज्ञान विमुक्तये

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

University Grants Commission

quality higher education for all